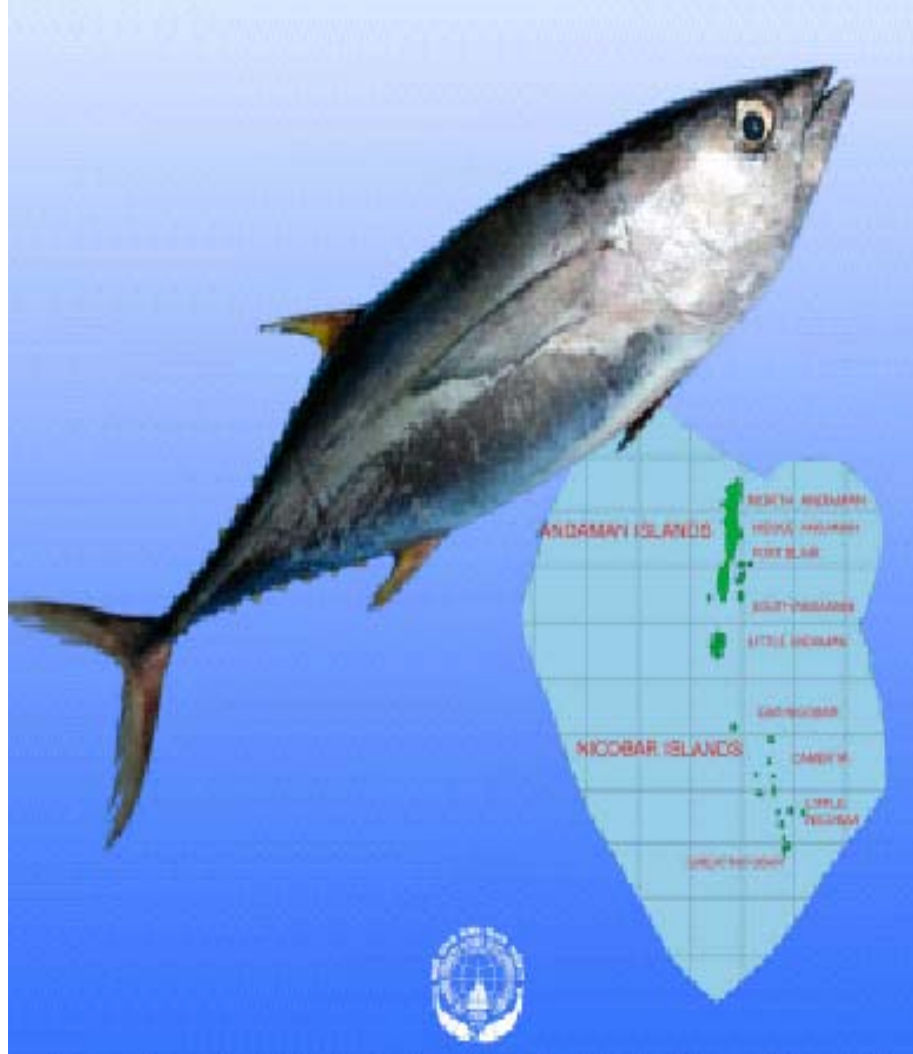


अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में टूना मत्स्की के विकास के लिए प्रस्ताव



समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

विषय

अध्याय	मद	पृष्ठ
	प्रस्तावना	1
1	भारत तथा अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में टूना मत्स्यकी – वर्तमान स्थिति	2
1.1	भूमिका	2
1.2	भारत में टूना मत्स्यकी	4
1.3	भारत से टूना मछली की निर्यात	7
2	टूना लॉग लाइन फिशिंग	9
3	अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में टूना मत्स्यकी का विकास	10
4	मत्स्यहरण क्षमता का विकास	11
4.1	अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में टूना लॉग लाइनर्स का प्रारंभ	11
4.2	टूना के हरण के लिए यांत्रिकृत मत्स्यहरण जलयान का विकास	12
4.3	मत्स्य एकत्रित करने का उपकरण	13
4.4	क्षमता निर्माण	
4.4.1	टूना का जहाज पर रख रखाव	13
4.4.2	अपेक्षित गुणवत्ता	13
5	अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में आधारभूत संरचना और निर्यात सुविधाओं का विकास	15
5.1	जंगलीघाट जेट्टी का विस्तार	15
5.2	जंगलीघाट में चिल्ड टूना पैकिंग सेन्टर की स्थापना	15
5.3	प्रसंस्करण विकास के लिए आधारभूत संरचना – अंडमान मत्स्यकी लिमिटेड- संत्र प्रसंस्करण संयंत्र का सुधार	16
5.4	निर्यात नौभरण	16
6	नीति एवं प्रचालन मुद्दे	18
6.1	नीतिगत मुद्दे	18
6.2	प्रचालनात्म मुद्दे	18
7	अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह टूना मत्स्यकी के विकास के लिए हाथ में लिया जाने वाले प्रस्तावित क्रिया-कलाप	19
7.1	लघु अवधि क्रिया –कलाप	19
7.2	मध्यम अवधि क्रियाकलाप	19
7.3	अपेक्षित निधि	19
7.4	प्रोजेक्ट के क्रियान्वयन का समय	20
7.5	निष्कर्ष (परिणाम)	21
7.6	लाभ और प्रभाव	21
	परिशिष्ट – 1	22
	परिशिष्ट – 2	23
	परिशिष्ट – 3	25
	परिशिष्ट – 4	29
	परिशिष्ट – 5	31
	परिशिष्ट – 6	33
	परिशिष्ट – 7	35
	परिशिष्ट – 8	37

प्रस्तावना

भारतीय अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ई ई जेट) के पास 2,13,000 टन महासागरीय टूना सम्पदा क्षमता है जिसमें इस समय मात्र 50,000 टन के आस-पास टूना का दोहन होता है । भारतीय समुद्री उत्पाद के निर्यात के वर्तमान स्तर को 2012 तक 4 बिलियन यू एस डालर तक बढ़ाने के लिए टूना सम्पदा के दोहन को महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में पहचान गया है । क्योंकि अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में कुल भारतीय अनन्य आर्थिक क्षेत्र का 28 प्रतिशत सम्मिलित किया है और इस द्वीपसमूह में वर्तमान महासागरीय दोहन नाम मात्र का है, टूना (मत्स्यकी) को बहुत बड़े पैमाने पर विकसित करने का प्रस्ताव है ।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न नीतियों पर विचार – विमर्श हेतु अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में टूना सम्पदा के विकास के लिए दिनांक 06 जुलाई 2007 को पोर्ट ब्लेयर में स्टेक होल्डर्स वर्कशॉप का आयोजन हुआ । इस वर्कशॉप की अध्यक्षता भारत सरकार के माननीय वाणिज्य राज्य मंत्री, श्री जयराम रमेश ने की और इस वर्कशॉप में श्री सी टारगे, मुख्य सचिव, अंडमान तथा निकोबार प्रशासन, श्रीमती भारती एस सिहाग, संयुक्त सचिव, वाणिज्य राज्य मंत्री, भारत सरकार, श्री जी मोहन कुमार, अध्यक्ष, एम पी ई डी ए, श्री एम के आर नायर मत्स्य विकास आयुक्त, एफ टी के वैज्ञानिक, श्री कुरुविला थामस, निदेशक (एम) एम पी ई डी ए और श्री जनक दिग्गल, विकास आयुक्त एवं सचिव (मत्स्यकी), अंडमान तथा निकोबार प्रशासन उपस्थित हुए । इस वर्कशॉप में विभिन्न औद्योगिक स्टेकहोल्डर्स और इच्छुक पार्टी भी उपस्थित हुए । लम्बे और विस्तृत विचार – विमर्श था के परिणाम स्वरूप इस द्वीपसमूह में टूना मछली के हरण के विकास से संबंधित मुख्य मुद्दों को पहचाना गया ।

यह भी निर्णय लिया गया कि एम पी ई डी ए एक टूना विशेषज्ञ की पहचान करेगा और अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में टूना सम्पदा के विकास के लिए कार्रवाई योजना तैयार करेगा तदनुसार टूना मत्स्यकी के विकास और टूना मछलियों के निर्यात के लिए यह योजना तैयार की गई है । मैं आशा करता हूँ इससे अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में टूना उद्योग के विकास को सहायता मिलेगी ।

श्री जयराम रमेश, वाणिज्य राज्य मंत्री और अंडमान तथा निकोबार प्रशासन से प्राप्त सक्रिय रूचि और समर्थन के लिए मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ ।

मैं श्री कुरुविला थोमस, श्री के जे एनथनी, सहायक निदेशक और श्री जार्ज स्कॉटेरिड्स (टूना सलाहकार) को इस रिपोर्ट को तैयार करने में किए गए प्रयास के लिए धन्यवाद देता हूँ ।

(जी मोहन कुमार)
अध्यक्ष

भारत तथा अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में टूना मत्स्यकी—वर्तमान स्थिति

1.1 प्रारम्भ

अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह हिन्द महासागर में बंगाल की खाड़ी के दक्षिण की ओर स्थित है। इसमें दो द्वीपसमूह शामिल हैं — अंडमान द्वीपसमूह और निकोबार द्वीपसमूह — जो हिंद महासागर के पूर्व से अंडमान सागर को अलग करते हैं। इन दो द्वीपसमूह को 10^{CE} नार्थ पेरालल द्वारा अलग अलग किया गया है। अंडमान उत्तर अक्षांश में है और निकोबार दक्षिण अक्षांश में पड़ता है। इस राज्य क्षेत्र में लगभग 572 द्वीपसमूह हैं जिसमें से 38 द्वीपों में आबादी स्थाई आबादी बसी हुई है। अंडमान द्वीपसमूह का कुल क्षेत्रफल 6408 वर्ग कि. मी. है और निकोबार द्वीपसमूह का क्षेत्रफल वर्ग लगभग 1841 वर्ग कि. मी. है। कुल तटीय लाइन की लम्बाई 1962 कि. मी. है जो पूरे भारत के तटीय सीमा का 1/4^{वाँ} भाग है। द्वीपसमूह के चारों ओर का अनन्य आर्थिक क्षेत्र (ई ई जेड) में 0.6 मिलियन वर्ग किलो मीटर क्षेत्र सम्मिलित है जो भारतीय अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZ) का लगभग 28 प्रतिशत का है।

मत्स्यकी इन द्वीपसमूह का एक प्रमुख प्रकृतिक संसाधन है। द्वीपसमूह का वर्तमान समुद्री मत्स्य उत्पादन 30,000 मीट्रिक टन है। जो अनुमानित उपलब्धता का लगभग 12 प्रतिशत है। अधिकतर उत्पाद स्थानीय तौर पर उपभोग कर लिया जाता है। अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में 45 मत्स्यकी गाँव हैं और 57 मत्स्य अवतरण केन्द्र हैं। लगभग 1810 मत्स्य हरण जलयान प्रचालन में हैं जिसमें से 1568 गैर-यांत्रिक जलयान, 102 मोटरीकृत जलयान तथा 140 यांत्रिक बोट हैं। विभिन्न आकार के यांत्रिक बोट मुख्य रूप से गिल नेटिंग और हेन्ड लाइन फिशिंग में लगी हुई हैं। प्रमुख फिशिंग गियर जो मत्स्य हरण के लिए इस्तेमाल किया जाता है वह है ड्रिफ्ट गिलनेट जो 40 प्रतिशत समुद्री मत्स्य लैंडिंग में योगदान देता है। अन्य फिशिंग गियर सामान्यता: शर्ट सीन, हुक और लाइन, कास्ट नेट आदि का भी उपयोग किया जाता है।

परिस्थिति प्रणाली की विशेषता

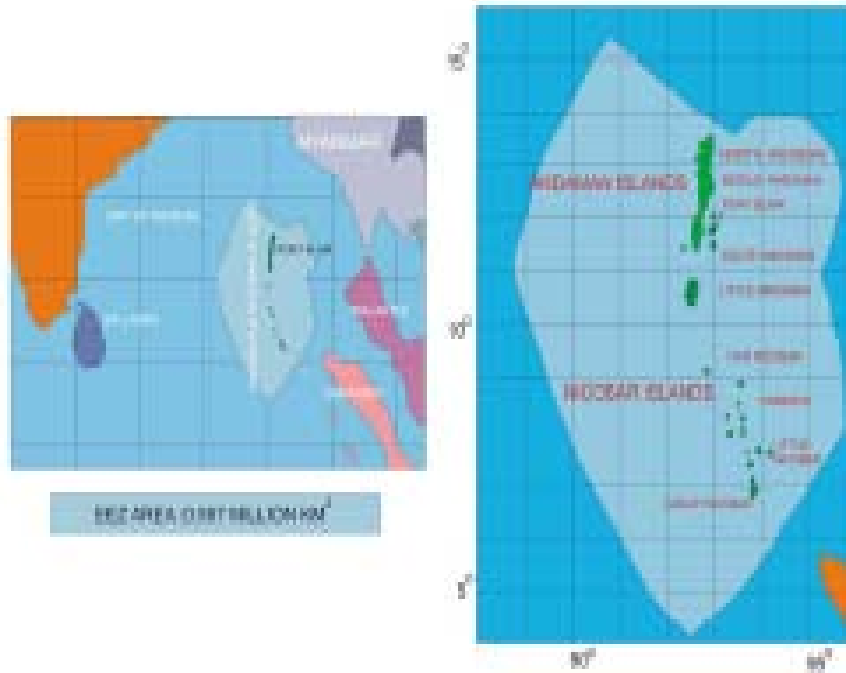
अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की परिस्थिति प्रणाली में मुख्यतः वन पारिस्थिति, मेगुव पारिस्थिति, समुद्री पारिस्थिति प्रणाली है। समुद्री पारिस्थिति प्रणाली को प्रभावित करने वाली प्रमुख नदी जो भारतीय उप महाद्वीप से बंगाल की खाड़ी में गिरती है वे हैं गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, गोदावरी और कृष्णा और मियामार से इन्नावडी और सालवीन। ग्रेट निकोबार में गलाथिया और उत्तर अंडमान में कलपांग के अलावा अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में कोई बारहमासी नदी नहीं है। प्रवाल भित्ति (कोरल रीफ) और उससे संबंधित प्रणाली विश्व के इस भाग में सबसे अधिक संरक्षित समुद्री जीवों में से एक है। प्रवाल भित्ति की भारी मात्रा प्रति वर्ष 24600 टन समजीव पैदा करता है। द्वीपसमूह के चारों ओर के समुद्र भरपूर मत्स्य जीवों से युक्त है जिसमें प्रमुख हैं उष्णकटिबंधीय फिनफिशेस, क्रस्टेशियन्स और सेफालोपोड्स। समुद्री स्तनधारियों में डुगोंग डुगोंग छिछले पानी पाया जाता है जबकि डॉलफिन्स अक्सर खुले समुद्र में मछलियों के झुण्डों के चारों ओर देखे जाते हैं। कछुए की चार प्रजाति अक्सर रेतीले (बीच) तट पर अपने अण्डे देती हैं। मेगुव तटीय प्रजाति के मत्स्यों के लिए और नर्सरी ग्राऊन्ड के रूप कार्य करती है और शंखमीन इस समूह के प्राकृतिक उत्पादन को बनाए रखती है।

वर्ष 1991 के दौरान कृषि मंत्रालय ने गहरे समुद्र में मत्स्य हरण प्रसंस्करण और इन द्वीपों से मत्स्य के निर्यात के लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया था । समिति विद्यमान आधारभूत संरचना और गहरे समुद्र में मत्स्य हरण के विकास प्रसंस्करण और अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह से मत्स्यों के निर्यात अवरोध पर विचार करने के बाद कई सिफारिशें की थी जो निम्नलिखित भी शामिल हैं:-

- मत्स्य और प्रसंस्करण में स्थानीय लोगों को प्रशिक्षण देना ।
- शीत भंडार, बर्फ संयंत्र, चिल्ड स्टोरेज, प्रसंस्करण संयंत्र बर्फ क्रशर, ब्लास्ट फ्रीजर की स्थापना ।
- टूना और टूना जैसे मत्स्यों का दोहन और टूना हरण को आधार पर टूना केनिंग संपन्न की स्थापना
- निजी और सार्वजनिक क्षेत्र से इक्विलिटी भागीदारी के साथ गहरे समुद्र की सम्पदा का कानूनी तौर पर दोहन की क्षमता रखने वाले मत्स्य हरण जलयानों को उपयोग में लाना ।

यह अनुमान है कि द्वीपसमूह के चारों ओर अनन्य आर्थिक क्षेत्र में 1.48 लाख मीटरी टन से अधिक वेलापवर्ती मत्स्य, तलमज्जी और महासागरीय मत्स्य संसाधन उपलब्ध है परन्तु इस समय अनुमानित दोहन का मात्र 20 प्रतिशत है । यह दर्शाता है कि अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के सामाजिक स्थिति के संवर्धन के लिए मात्स्यिकी को एक प्रमुख क्षेत्र के रूप में विकसित करने की बहुत गुंजाइश है । सम्भाव्य मत्स्य संसाधनों में से महासागरीय टूना और टूना जैसे मछलियों का आकलन लगभग 0.673 लाख टन किया गया है और अतः इन संसाधनों को दोहन के विशेष प्रयास आरंभ किया जाना आवश्यक है ।

अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के चारों ओर के अनन्य आर्थिक क्षेत्र

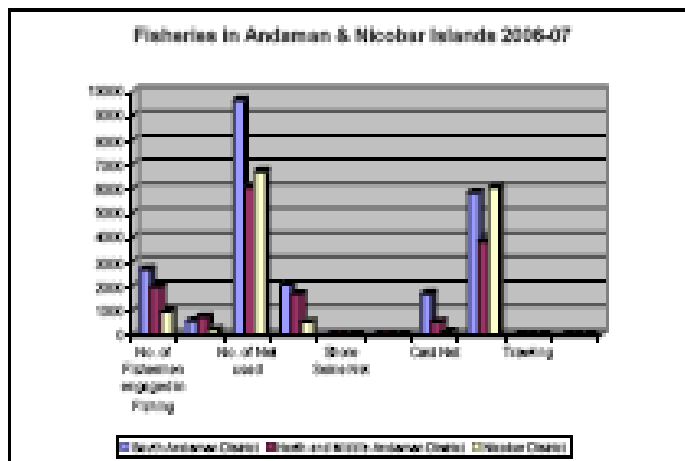


समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में मात्स्यकी के तथ्य और आंकड़े

अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के तीनों जिलों में कुल 5617 मछुआरे समुद्री मत्स्य हरण में लगे हुए हैं । मत्स्य हरण में लगे कुल देशी जलयानों की संख्या 1524 है और मत्स्य हरण के लिए उपयोग किए जाने वाले प्रमुख गियर हूक और लाइन है इसके बाद गिल नेट और कास्ट नेट का प्रयोग किया जाता है । 1524 परम्परागत देशी जलयानों में से 1279 जलयानों को मोटरीकृत किया गया है। यांत्रिकृत बोटों की संख्या नाम मात्र की है । इन द्वीपों के बहुत अधिक सम्भाव्य संसाधनों के दोहन के लिए जलयानों के यांत्रिकृत करने का कार्य युद्ध स्तर पर हाथ में लिया जाना है । तथ्यों और आंकड़ों का विवरण परिशिष्ट – 1 में दिया गया है ।

वर्ष 2006-07 में अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में मत्स्यकी.



1.2 भारत में टूना मात्स्यकी

झींगे तथा ग्राउण्ड फिश के बाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेचे जाने वाली मछली में टूना का तीसरा स्थान है । टूना मछली मूल्य के अनुसार अंतरराष्ट्रीय रूप से मछली के व्यापार में 9 प्रतिशत का आय प्रदान करती है । पूरे विश्व में टूना मछली का हरण एक वर्ष में 3.7 से 3.8 मिलियन टन है जो समुद्री मत्स्य अवतरण का 5 प्रतिशत है । विश्वभर में उतरने वाले वाणिज्यिक रूप से महत्वपूर्ण प्रजाति स्किपजैक (50%) यलोफिन 30% बिग आई (10%) और अन्य (10%) है कुल मिलाकर प्रशांत महासागर से 50% टूना पकड़ा जाता है जो स्किपजैक के हरण के लिए सबसे बड़ा क्षेत्र है जबकि हिन्द महासागर येलो टूना मत्स्य के लिए सबसे बड़ा हरण क्षेत्र है । टूना मत्स्यकी के लिए सबसे प्रमुख देश जापान उसके बाद थाइवान और स्पेन है ।

भारत में टूना मत्स्यकी को दो वर्गों में बांटा जा सकता है अर्थात् (1) तटीय टूना अथवा टून्निज का हरण (2) महासागरीय टूना । लक्षित टूना पकड़ने लिए तटीय टूना मात्र सीमित केन्द्रों में ही अस्तित्व में है, चूँकि भारत में कई केन्द्रों में टून्निज को अधिक तरजीह नहीं दी जाती है अतः तटीय टूना का मूल्य कम होता है । जबकि टून्निज का वार्षिक अवतरण काफी अधिक है ।

भारत में महासागरीय टूना हरण विकासशील स्तर पर है । टूना मछली का अवतरण कम रहती है । कुछ केन्द्रों में यांत्रिकृत बोटों से ड्रिफ्ट नेट/सीन से अवतरण की रिपोर्ट कभी-कभी प्राप्त होती है ।

तटीय टूना मत्स्यकी भारतीय अनन्य आर्थिक क्षेत्र में तटीय टूना की अनुमानित क्षमता लगभग 65,000 टन है जिसमें मुख्यतः स्किपजेक, बुलेट टूना, लॉग टेइल, लिटिल टूना और बोनिटो आदि हैं । भारत में तटीय टूना का वार्षिक औसत अवतरण लगभग 49,000 टन है तथा मुख्य प्राजातियों का अनुपात इस प्रकार है:-

लिटिल टूना	49 प्रतिशत
फ्रिन्गेट और बुलेट टूना	23 प्रतिशत
लॉगटेल टूना	13 प्रतिशत
स्किपजेक	06 प्रतिशत
अन्य	09 प्रतिशत

80 प्रतिशत से अधिक अवतरण पश्चिमी तट और लक्षद्वीप में होता है ।

भारत में टूना के लिए एकमात्र संगठित मत्स्य उद्योग लक्षद्वीप में स्किपजेक के लिए पोल एवं लाइन मात्स्यकी है । इस क्षेत्र में इसकी भोरा अच्छी है ।

महासागरीय टूना मात्स्यकी

भारतीय अनन्य आर्थिक क्षेत्र में महासागरीय टूना का मात्स्यकी की सम्भावित क्षमता 213,000 टन है । जिसमें येलोफिन 54 प्रतिशत स्किपजेक 40 प्रतिशत और बिग आई 6 प्रतिशत शामिल है । भारत में महासागरीय टूना का अवतरण नाम मात्र है । यद्यपि पिछले कुछ वर्षों से लघु और मध्यम यांत्रिकृत जलयानों के द्वारा ड्रिफ्ट नेट, हूक और लाइन तथा ट्रोलिंग लाइन के माध्यम से अवतरण में आंशिक वृद्धि की रिपोर्ट प्राप्त हुई है ।



अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के समुद्री संसाधनों का अनुमानित उपलब्धता

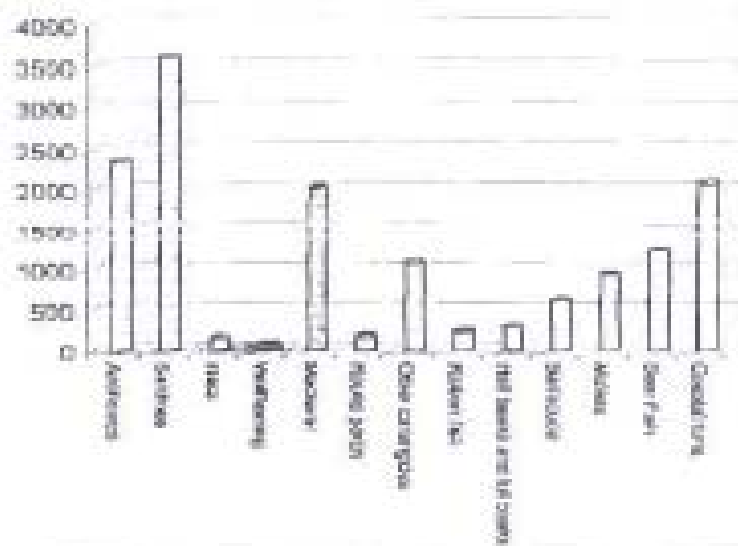
मुख्यतः मत्स्यकी तटीय जल में होता है । लगभग 2973 सक्रिय पूर्ण कालिक मछुआरे हैं तथा दोहन का वर्तमान स्तर लगभग 30,000 मीट्रिक टन है ।

परिशिष्ट 2 की तालिका 2,3, और 4 में इस द्वीपसमूह में दोहन के वर्तमान स्तर और अनुमानित क्षमता दी गई है ।

यह देखा गया है कि समुद्री संसाधनों का दोहन औसत 19 प्रतिशत मात्र ही है ।

अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में 1980 के पूर्वार्ध से समुद्री मत्स्य उत्पादन का विवरण तालिका – 3 में दी गई है । उत्पादन स्थिर है, यह एक सदी से 25–30 टन के लगभग आगे पीछे होता रहा है । वर्ष 2000 में सबसे अधिक 30.339 टन मछली पकड़ी गई । दक्षिण अंडमान में 70 प्रतिशत मछली का अवतरण हुआ इसी प्रकार रंगत, डिगलीपुर, लिटिल अंडमान और अन्य क्षेत्रों में भी हुआ । पिछले पाँच वर्षों (1998–2002) के दौरान पकड़ी गई मछलियों का प्रजातिवार विवरण तालिका – 2 में दी गई है तथा औसत हरण का घटक चित्र 2 में दिया गया है । मत्स्य अवतरण में संसाधन वर्ग योगदान पर्सेस (16.5%) और सारडिन्स, (13.3%) इसके साथ केरनिगड्स, मेकरेल टूना, म्यूलेट्स, सिल्वर बेल्लिस एनकोवस् आदि हैं ।

अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह 2006-07 में जातिवार अवतरण (पेलैजिक स्रोत)



स्थानीय मत्स्यकी के अलावा मुख्यभूमि के कुछ झींगी ट्रॉलर ने उन्नीसवीं सदी में अंडमान जल में यात्रा की जिसका उद्देश्य गहरे समुद्र लॉबस्टर संसाधन का शिकार करना था । शिकार की गई लोबस्टर का अवतरण मुख्यभूमि के पूरब तट के पत्तन पर किया गया । इसके अलावा चार्टर और पट्टे पर लेने के स्कीम के तहत कुछ विदेशी टूना लॉग लाइन जहाज भी प्रचालित की गई जो अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के अनन्य आर्थिक क्षेत्र में गहरे समुद्र टूना के हरण के लिए प्रयोग में लाया गया । पट्टे पर लिए दूसरे जहाजों के समूह का प्रयोग पर्च संसाधनों के लिए प्रयोग महाद्वीपीय शेल्फ और ढाल पर मत्स्यहरण हेतु किया गया ।

1.3 भारत से टूना का निर्यात

वर्ष 2005-06 के दौरान रु. 6931.07 लाख / 15.68 मिलियन डॉलर के मूल्य के 16627 टन प्रभावी निर्यात के मुकाबले वर्ष 2006-07 में रु. 13038.30 लाख मूल्य और 29.54 मिलियन डॉलर रिकार्ड किया गया था । वर्ष 2006-07 में निर्यात प्रापण 88 प्रतिशत से अधिक रिकार्ड किया गया । निर्यातित टूना का प्रमुख उत्पादन रूप परिशिष्ट - 3 - सारणी -5 में दिया गया है ।

मदवार निर्यात

द्रुतशीतित टूना मूल्य अर्जन वस्तु का उच्चतम एकक है लेकिन भारी मात्रा में टूना हिमशीतित रूप में निर्यात किया जाता है । वर्ष 2006-07 में विस्तृत मदवार निर्यात परिशिष्ट-3-सारणी-6 में दिया गया है ।

देशवार निर्यात

मूल्य की शर्तों पर भारत से टूना का निर्यात करने वाले श्रेष्ठ वर्ग के देश थे यूरोपियन यूनियन उसके बाद दक्षिण पूर्वी एशिया, जापान, मध्य पूर्व आदि जैसा परिशिष्ट – 2 में दिया गया है ।

पत्तनवार निर्यात

कोच्चि निर्यात का मुख्य पत्तन है उसके पश्चात पीपाव, चैन्नई, मुंडरा, जे. एन. पी आदि है जैसा कि परिशिष्ट 3 – सारणी 8 में दिया गया है ।

द्रुतशीतित टूना (सशमी) निर्यात

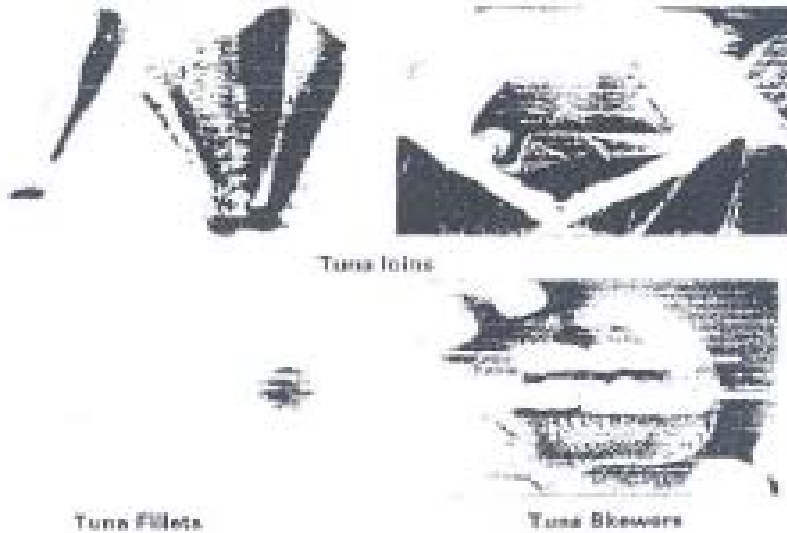
वर्ष 2006–07 के दौरान रू. 1345.21 लाख और 3.54 मिलियन डॉलर के 758 टन मूल्य का द्रुतशीतित टूना का निर्यात किया गया जबकि पिछले वर्ष निर्यात नाममात्र का रहा । प्रमुख रूप से निर्यातित द्रुतशीतित टूना का विवरण परिशिष्ट 3 – सारणी –9 में दिया गया है ।

पत्तनवार निर्यात

मात्रा एवं मूल्य दोनों शर्तों में द्रुतशीतित टूना का विवरण परिशिष्ट – 3 सारणी 10 में दिया गया है ।

देशवार निर्यात

जापान भारत से वस्तु आयात करने वाला प्रमुख देश था उसके बाद श्रीलंका जैसा परिशिष्ट 3 – सारणी 11 में दिया गया है ।



अध्याय – 2

टूना लांग लाइन फिशिंग

मोनोफिलामेंट लांग लाइन मत्स्यहरण सम्पूर्ण विश्व के महासागरीय टूना संसाधनों की शिकार की नवीनतम पद्धति है । लाइन मीनहरण मूलतः तंतु और हुक के साथ संयोजित रहता है । लांग लाइन निष्क्रिय मीनहरण गियर है और ट्रालिंग जैसे मत्स्यहरण पद्धति की तुलना में उच्च ईंधन दक्ष, पर्यावरण हितैषी और जाति चयन वाला है । लांग लाइन का प्रयोग पूरे जल स्तंभ में पेलैजिक और तलमज्जी (डेमर्सल) मत्स्यन के लिए किया जाता है ।

मुख्य लाइन

मुख्य लाइन में शामिल लांग लाइन जिसमें कई संख्या में शाखा लाइन जोड़े जाते हैं । मुख्य लाइन से जुड़े अन्य सहायक उपकरण हैं पादबत्ती, फ्लोट लाइन, घूर्णमान और संयोजी, ध्वज स्तंभ, प्रकाश बोया, रेडियो बोया और प्रकाशक्षेपी आदि । मुख्य लाइन उच्च विशिष्ट गुरुत्व वस्तु जैसे पोलियामाइड, पॉलिविनिल क्लोराइड का बना होता है । मोनोफिलामेंट मुख्य लाइन की कुल लम्बाई मीनहरण ग्राऊंड, कार्य मात्रा तथा अन्य आकलनों के अनुसार भिन्न होगा । सामान्यता मुख्य लाइन की लम्बाई 20–75 कि. मी तक भिन्न हो सकता है । प्रकारात्मक लॉग लाइन प्रणाली परिशिष्ट 4 में दर्शाया गया है ।

शाखा लाइन

शाखा लाइन जिसे डोर कहा जाता है उपयुक्त शाखा लाइन अन्तराल पर मुख्य लाइन से जुड़ा है । आधुनिक टूना लांग लाइन में शाखा लाइन में निम्नलिखित भाग शामिल है:—

1. स्नैप
2. बाक्स स्विवल
3. नाइलोन फिलामेंट
4. वायर लीडर
5. सिंकर
6. हुक आदि

मुख्य लाइन में प्रयुक्त अन्य वस्तु

1. फ्लोट्स तथा फ्लोट लाइन
2. फ्लैग पोल
3. लाइट बोया
4. रेडियो बोया
5. रडार रिफ्लेक्टर आदि

लांग लाइन का प्रकार

1. ड्रिफ्ट लांग लाइन
2. वर्टिकल लांग लाइन

अध्याय – 3

अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में टूना मत्स्यहरण का विकास

अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में गहरे समुद्र मत्स्यहरण की सुदृढ़ता, कमजोरी और अवसर

सुदृढ़ता

- अनन्य आर्थिक क्षेत्र जिसमें 0.6 मिलियन वर्ग किलोमीटर क्षेत्र शामिल है, जो भारतीय अनन्य आर्थिक क्षेत्र का लगभग 28 प्रतिशत है ।
- 1,912 कि. मी. का तटीय क्षेत्र कुल भारतीय तटीय क्षेत्र का 25 प्रतिशत के लगभग है ।
- प्लेजिक, डेमेर्सल सहित तट से दूर और गहरे समुद्र में प्रचुर मत्स्यकी संसाधन 1.48 लाख टन ।
- अनुरूप प्रदूषण रहित तटीय जल

बाधाएँ

- द्वीपसमूह का मुख्यभूमि से 100 कि. मी. से अधिक दूरी पर स्थित होना
- कई तटीय क्षेत्र में पहुँच संभव नहीं है ।
- देशीय [निपुणता/प्रौद्योगिकी](#) और द्वीपसमूह में प्रशिक्षित कर्मियों की कमी
- उच्च लागत के कार्यकलापों में पूँजी निवेश करने वाले इच्छुक उद्यमियों की कमी ।
- आधाभूत संरचना अथवा भारी मात्रा में मत्स्यहरण/तट में/ तट से दूर जल जीवशाला की कमी ।
- विदोहन/कृषियोग्य समुद्री संसाधनों की संभाव्यता पर विश्वसनीय आँकड़ों की कमी
- मत्स्य संस्करण तथा विपणन में अपर्याप्त आधारभूत संरचना ।
- प्रौत्साहन देने हेतु मत्स्यहरण के विकास और विनियम के लिए बृहत नीति की कमी ।

अवसर

- मत्स्य संसाधनों के वाणिज्यिक दोहन की भारी गुजांइश
- प्रदूषण मुक्त जल की उपलब्धता
- टूना तथा समुद्री सजावटी मछलियों के उत्पादन तथा निर्यात के अवसर
- मत्स्यकी तथा उससे सम्बद्ध क्षेत्रों में रोजगार के अवसर

अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह बृहत समुद्री मत्स्यकी नीति परिशिष्ट – 8 में दिया गया है ।

रणनीति

- मत्स्यकी क्षमता का विकास
- मछुआरों और पर्णधारियों के बीच क्षमता निर्माण
- द्रुतशीतित टूना के रखरखाव के लिए आधारभूत सुविधाओं का निर्माण
- निर्यात सुविधा

मत्स्यहरण क्षमता का विकास

4.1 अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में टूना लांग लाइनर का प्रारंभ

भारतीय सागर में चलने वाले प्रायः सभी गहरे पानी मत्स्यहरण जहाज और अधिकांश यंत्रिकृत मत्स्यहरण जहाज मछुवा जहाज होते हैं और इसलिए विशेष संसाधन प्रचालन के लिए लांग लाइनिंग से सुसज्जित नहीं है। चूंकि भारत में टूना के उत्पादन के लिए कोई विशिष्ट मत्स्यहरण नौका नहीं था, एम पी ई डी ए ने विद्यमान मत्स्यहरण जहाजों में टूना के उत्पादन को बढ़ाने में वर्ष 2006 से एक स्कीम का कार्यान्वयन आरंभ किया। हालांकि इस दिशा में उद्योग की अच्छी प्रतिक्रिया दिखाई देती है, लेकिन जहाजों का असली टूना लांग लाइनर की ओर इच्छा अनुसार प्रगति नहीं कर पायी। डेक लेआऊट में परिवर्तन, कुछ उपकरणों की स्थिति का पुनः निर्धारण, जहाज के कुछ भागों को सुदृढ़ करना, द्रुतशीतित मछली के भंडार के लिए स्थल को खानाबंद करने जैसे कार्य सहित मोनोफिलामेंट लांग लाइन प्रणाली के प्रचालन के लिए जहाजों में परिवर्तन करना। मुख्य लाइन के लिए फिरकी (स्पूल), लाइन सेटर, लाइन हॉलर, हुक टब मुख्य लाइन, शाखा लाइन, हुक, फ्लोट लाइन, रेडियो बोया आदि शामिल कर मोनोफिलामेंट लांग लाइन प्रणाली स्थापित किया जाए। यह आवश्यक है कि देश में टूना लांग लाइनर के डिजाइन और निर्माण प्रौद्योगिकी को विकसित किया जाए। 11वीं योजना अवधि में एम पी ई डी ए का कम से कम 800 मत्स्यहरण जहाज को टूना लांग लाइन में परिवर्तित करने और टूना के निर्यात को 500 मिलियन यू एस डॉलर तक बढ़ाने का प्रस्ताव है।

टूना संसाधन के लिए गहरे समुद्र लांग लाइनिंग के बढ़ावा देना, येलो फिन टूना के उत्पादन में वृद्धि को फोकस करने वाला दूसरा क्षेत्र है। इस प्रयोजन के लिए द्वीपसमूह की नीति में निजी पार्टियों को इस जोखिम क्षेत्र में आकर्षित करने के लिए उपयुक्त रूप से परिवर्तन किया जाना चाहिए। मुख्य भूमि के नजदीक होने के कारण द्वीपसमूह के अनन्य आर्थिक क्षेत्र में मत्स्यहरण के लिए भारत के पूर्व तथा पश्चिम तट में जहाजों को चलाने के प्रचुर अवसर हैं। ऐसा रिपोर्ट किया गया है कि अंडमान तथा निकोबार प्रशासन द्वारा 11वीं योजना में 45 टूना लांग लाइनर को चरणबद्ध तरीके से आरंभ किया गया है। इसे योजनाबद्ध और वैज्ञानिक तरीके से किया जाएगा। मुख्यभूमि के मछुआरों ने मत्स्यहरण के लिए अंडमान तथा निकोबार के जल में प्रवेश के लिए लांग लाइनिंग में शामिल होने हेतु पहले ही विशेष रुचि दिखाई है। टूना लांग लाइनर में मत्स्यहरण जहाजों को परिवर्तन करने की एम पी ई डी ए स्कीम के अंतर्गत मुख्यभूमि में कई संख्या में जहाज परिवर्तन प्रक्रिया के अधीन हैं और इन जहाजों को एक-दो माह के भीतर वाणिज्यिक टूना मत्स्यहरण के कार्य में लगाया जाएगा। इनमें से कुछ जहाजों को आरम्भिक अवस्था में अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के अनन्य आर्थिक क्षेत्र में मत्स्यहरण की अनुमति दी जाए और इससे प्रेरित होकर स्थानीय निवेशक द्वीपसमूह से कुछ जहाज के प्रचालन के लिए प्रेरित हो सकेंगे। इसके प्रारंभ के साथ प्रस्तावित किया जाता है कि इन द्वीपों में महासागरीय संसाधनों के लिए मुख्यभूमि से 50 मत्स्यहरण जहाज (जिसमें 30 यंत्रिकृत मत्स्यहरण जहाज हो) चलाए जाएँ। बोट जंगलीघाट जेट्टी से परिचालित की जाएगी और पकड़ी गई मछली को नव निर्मित पैकिंग सेंटर में पैक की जाएगी और उत्पादों का पोर्ट ब्लेयर हवाई अड्डे से परिवहन किया जाएगा। एक बार में संभावित अर्जन प्रदर्शित करते हुए स्थानीय निवेशक टूना मत्स्यहरण में व्यक्तिगत रूप से और मुख्यभूमि के साझेदारों के साथ संयुक्त उद्यम के रूप में जुड़ने के लिए प्रेरित किए जा सकेंगे। भंडारों और उत्पादों की बिक्री, ईंधन की बिक्री, चारे की आपूर्ति और रोजगार सृजन के द्वारा स्थानीय आर्थिक को बढ़ावा मिलेगा। पोर्ट ब्लेयर स्थित दो संसाधक के पास निर्यात के लिए कच्ची सामग्री की अतिरिक्त आपूर्ति का कार्य भी है।

अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के मछुवारा समुदाय में पश्चिम बंगाल, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडू और केरल के प्रवासी भी शामिल हैं। वर्तमान में अधिकांश स्थानीय मछुआरे मत्स्यहरण के कार्य में लकड़ी की डींगियों का प्रयोग करते हैं और प्रति फेरे में 100 से 150 कि. ग्रा. मछली का हरण करते हैं। मत्स्यहरण में गिलनेट, हुक तथा लाइन कास्ट लाइन शोर साइनस, लांग लाइन्स, ट्रॉवल नेट्स आदि प्रयुक्त किए गए। महासागरीय टूना के शिकार के लिए नई चुनौतियों का सामना करने के लिए पारम्परिक नौकाओं में संवर्धन/बदलने की आवश्यकता है। इस समय इस द्वीपसमूह में बहुत कम संख्या में यंत्रिकृत बोट चलाए जा रहे हैं। 10 और 24 समुद्री मील के बीच के जल से मत्स्य संसाधनों के दोहन के लिए चरणबद्ध तरीके से इसमें वृद्धि की जा सकती है। टूना मत्स्यहरण के आरंभिक प्रगति के लिए अंडमान तथा निकोबार जल में मुख्यभूमि के जहाजों को चलाना प्रारंभ करना आवश्यक है। टूना को हवाई मार्ग से निर्यात किया जाना है और इसके लिए एक क्रान्तिक आयतन उत्पन्न किया जाना है। अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में केवल कुछ यंत्रिकृत जहाज चलाए जा रहे हैं। हवाई मार्ग से निर्यात के मत्स्यहरण की यह मात्रा पर्याप्त नहीं होगी। अतः निर्यात योग्य माल की मात्रा में बढ़ोतरी के लिए मुख्यभूमि के जहाजों का प्रचालन आवश्यक है।

4.2 टूना मत्स्यहरण के लिए मोटरीकृत मत्स्यहरण जलयान में संवर्धन

वर्तमान में अधिकांश मछुआरे तटीय क्षेत्र से प्लेजिक संसाधनों के दोहन के लिए गैर यंत्रिकृत और यंत्रिकृत मत्स्यहरण नौका का प्रयोग करते हैं। थोड़ा सा परिवर्तन कर वर्टिकल लांग लाइन के प्रयोग द्वारा इन जहाजों का प्रयोग टूना मत्स्यहरण के लिए प्रयोग संभव है। इस समय प्रादेशिक सीमा के भीतर (तट से 6 – 7 कि. मी. के भीतर) जाते हैं और औसतन 100 कि. मी. मछली पकड़ते हैं। देशी जलयान का कार्यक्षम अवधि 5 वर्ष बताया गया है जिसे बाद में पूर्ण मरम्मत करना होगा या बदलना होगा।

दक्षिण अंडमान जिले में 703 मोटरीकृत पारम्परिक स्थानीय अर्टिसेनल जहाज हैं। यह जहाज 10–12 मीटर लम्बा है और प्रत्येक में प्रणोदन के लिए एक छोटा डीजल इंजट फिट होता है। जहाज के अनिवार्य भाग के रूप में कुछ अविकसित भंडारण सुविधा उपलब्ध है लेकिन अधिकतर भिन्न साइज के स्थानान्तरणीय रोधी पेटी में और निर्माण सामग्री पर निर्भर है। इन जहाजों में परिवर्तन के लिए ले जाते समय इसमें पकड़ी गई मछली के भंडार के लिए एक रोधी पेटी अथवा 2 मीटर x 1.2 मीटर x 7 मीटर रवाना, साथ में स्थानान्तरणीय देशान्तरीय विभाजक की आवश्यकता होगी। पेटी की क्षमता लगभग 1.25 धनमीटर (50 मि. मी. रोधी रूप में यूरेथेन के बाद) होगी और 4–5 अच्छे साइज के टूना (40 कि. ग्रा.) स्लरी रूप में धारण करने की क्षमता होनी चाहिए। पकड़ी गई मछली के प्रसंस्करण रनर अथवा फोम मेटर्स अच्छादित 2 x 1 मीटर का एक समतल डेक की भी आवश्यकता है।

पेटी/खाना का आरेख परिशिष्ट –6 में दिया गया है।

ऐसे लगभग 100 बोट को आरंभ में लांग लाइनिंग के लिए परिवर्तित किया गया। ऐसे नौकाओं के द्वारा संभावी महासागरीय संसाधनों का दोहन किया जा सके 20 प्रतिशत मत्स्यहरण का विवरण का परिशिष्ट – 7 में दिया गया है।

4.3 मत्स्य एकत्रित करने का साधन (एफ ए डी)

देखा गया है कि बहने वाली वस्तुएँ जैसे लट्टे शाखाएँ, बेड़ा, रस्सी अथवा मूल हेल मछली आदि अपने चारों तरफ मछलियों को एकत्रित करता है । मछुआरे मछलियों के इस बहती वस्तुओं के चारों ओर एकत्रित होने की जानकारी का लाभ उठाते हैं । दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र और पश्चिम प्रशान्त महासागरीय क्षेत्र से वस्तुओं के बहने के मौसम में बहुत बड़ी मात्रा में मत्स्य का हरण किया जाता है ।

ऐसी वस्तुओं का होना संयोग है इससे लम्बे समय तक इसका प्रयोग असम्भव है, इसलिए मछुआरे अपने बेड़े का निर्माण करते हैं और उसे समुद्र में लंगर डाल कर छोड़ देते हैं ताकि उनके लिए प्रवेश योग्य हो सके । इन बेड़ों को सामान्यतः मत्स्य एकत्रित करने के साधन (एफ ए डी) अथवा पयाओस (फिलिपीन्स) कहा जाता है ।

मत्स्य एकत्रित करने के साधन टूना और डॉलफिन जैसे वेलापवर्ती मछली को आकर्षित करती है जो कई देशों के टूना मत्स्यकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण नवीनतम विकास है ।

यह विधित है कि अंडमान तथा निकोबार प्रशासन राष्ट्रीय महासागर प्रौद्योगिकी संस्थान (एन आई यो टी) द्वारा निर्मित 10 अदद मत्स्य एकत्रित करने के साधनों को ऐन्कर करने की योजना बना रहा है । जिस क्षेत्र में मत्स्य एकत्रित करने के साधन ऐन्कर किया गया है, वहाँ से जिसे मोटरीकृत किए गए देशी डोंगी हैं, से वर्टिकल लगे लाइन के इस्तेमाल से मत्स्यहरण की सलाह दी जाएगी । इस प्रकार के मत्स्य एकत्रित करने के साधनों के लगाए जाने से मत्स्यहरण लोकेशन बढ़ जाता है, इस क्षेत्र में प्रवासी टूना जैसी मछलियों को पकड़ते हैं अतः कुल मिलाकर मत्स्यहरण दर बढ़ जाता है । अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में स्थाई, अस्थायी, कम मूल्य के एफ ए डी (मत्स्य एकत्रित करने के साधन) का उपयोग किया जा सकता है ।

4.4 क्षमता निर्माण

4.4.1 जहाज में टूना का हेन्डलिंग

टूना मछली के बाजार में आने पर उचित मूल्य पर प्राप्त करना एक महत्वपूर्ण तथ्य है । जहाज पर टूना को हेन्डल करने के कई तरीके हैं । यद्यपि मछली पकड़ना की विधि और इसके बाद परिक्षण का बड़ा महत्व है । भारत में जहाज पर पकड़ी गई मछलियों के हेन्डलिंग में अधिक विशेषज्ञ नहीं है जिसके परिणामस्वरूप पकड़ी गई मछलियों का दाम कम प्राप्त होता है । पानी से मछली को निकालने, मछली को मारने, साफ करने और जहाज पर भंडारण आदि महत्वपूर्ण कार्य हैं जिसे बहुत ध्यानपूर्वक और व्यवसायिक तरीके से हाथ में लिया जाना है । टूना उष्ण रक्त वाला जीव है जिसका आन्तरिक तापमान सम्पूर्ण जीवन में लगभग 28' सेन्टीग्रेट है । टूना मछली का तापमान कुछ विशेष स्थिति (तनाव, संघर्ष उनका हरण करते समय) 35' सेन्टीग्रेट अथवा इससे अधिक बढ़ सकता है । जहाज पर जब टूना मछली संघर्ष करती है तो उस समय उसका शरीरिक तापमान बढ़ जाता और लेक्टिक एसिड बनने लगता है जिससे हिस्टेमिन का उत्पादन होता है जो की जैव संकट है और यह उपभेक्ता के लिए हानिकारक है । टूना मछली को उचित तरीके से हेन्डल करने से ही टूना माँस को संरक्षित किया जा सकता है । इस मत्स्य को सबसे अच्छी स्थिति में रखने के लिए इसके आन्तरिक तापमान शीघ्र ही 1' सेन्टीग्रेट तक कम किया जाना चाहिए तथा उत्पादन के सभी स्तर पर इसे बनाए रखना चाहिए मूल्य वर्धक टूना उत्पादों का प्रसंस्करण का विवरण परिशिष्ट – 5 में दिया गया है ।

4.4.2 अपेक्षित गुणवत्ता

कच्चे माल को ध्यानपूर्वक हेन्डल किया जाए ताकि माँस नष्ट होने से बचाया जा सके । अतः निर्यात के लिए टूना मछली पकड़ने का सबसे अच्छा तरीका लॉग लाइन है जिसमें हानि बहुत ही कम है । टूना मछली जिसे तनाव के तहत पकड़ते हैं उसमें रसायनिक परिवर्तन होता है – इस स्थिति को ' ज्वलन ' कहते हैं जिसके कारण माँस गुदेदार और अभोज्य हो जाता है । टूना के निर्यात के लिए प्रसंस्करण में शीघ्रता और सही तरीके से करने की आवश्यकता है । मछली शीघ्रता से ब्लेड, गिल्ड, गटट्ड और चिल्ड किया जाना चाहिए । सशिमि के लिए बाजार में टूना न केवल बाहरी नजरिए से (जैसे चमकदार/साफ त्वचा, नमयुक्त आँखे चमकदार त्वचा और बिना टूटे उदर) बल्कि माँस में मछली को वसा से आंका जाता है । वसा के नमूने के लिए मछली के पूँछ से छोटा टुकड़ा काट कर उसके रंग और तेल की जाँच की जाती है । अधिकतर क्रेता देश में टूना का निर्यात सामान्यता ताजा/हिम शीतित मछली के लिए लागू खाद्य संरक्षा विनियम के अनुसार बंद किया जाता है । भारी धातु की सीमा में भिन्नता है । इटली में मर्करी की अधिकतम सीमा 0.7 मि. ग्रा./कि. ग्रा. है । जापान में 0.4 मि. ग्रा./कि. ग्रा. है । अधिकांश क्रेता देशों में कैडमियम की अनुमति सीमा 0.5 मि. ग्रा./कि. ग्रा. है जबकि शीशा के लिए 0.5–2.0 मि. ग्रा./कि.ग्रा. की भिन्नता है । अंतर्राष्ट्रीय रूप से टूना के व्यवसाय के लिए उच्च स्तर पर टूना माँसपेशी के सेवन से यदि उल्टी, दस्त तथा त्वचा में जलन होती है जो हिस्टैमिन हेतु जाँच भी की जाती है । अधिकांश क्रेता देश अनुमति के स्तर में 200–500 मि. ग्रा./कि. ग्रा. की भिन्नता है ।

मछुवारों को प्रशिक्षण

टूना लांग लाइनर जहाज के प्रारंभ और मत्स्यहरण शुरू करने, निपटान करने, पैकिंग करने और निर्यात करने के लिए स्थानीय लोगों को प्रशिक्षण देने की आवश्यकता होगी । मछुआरों के मामले में जहाज पर यात्रा से संबंधित कार्यकलापों और मछली पकड़ने के बाद की कार्रवाई पर प्रशिक्षण दिया जाएगा । भारत में वैज्ञानिक एवं वाणिज्यिक टूना लांग कर्मचारियों को ग्रेड अनुसार गुणता वाले टूना के निर्यात और सही पैकिंग प्रणाली पर प्रशिक्षण दिया जाएगा । अतः यह आवश्यक है कि विदेशी विशेषज्ञों से तकनीकी सहायता प्राप्त कर इस क्षेत्र में सुविज्ञता प्राप्त करने के क्रोड का विकास किया जाए । एम पी ई डी ए ने हाल में एक टूना लांग लाइनर/प्रसंस्करण विशेषज्ञ की नियुक्ति की है और उनकी सेवा का उपयोग अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह सहित राष्ट्रीय स्तर पर क्षमता निर्माण में किया जाएगा ।

अध्याय-5

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में आधारभूत और निर्यात सुविधाएँ का विकास

5.1 जंगलीघाट जेट्टी का विस्तार

जंगलीघाट जेट्टी से 30-50 जलयानों के प्रचालन की सुविधा के लिए (इनमें आरम्भ में गहरे समुद्र के 10-15 जलयान होंगे और धीरे-धीरे 15-20 एम.रेंज के अतिरिक्त जलयान इसमें शामिल होंगे) इस अवतरण केन्द्र में निम्नलिखित सुविधाओं की आवश्यकता है ।

1. जंगलीघाट जेट्टी का विस्तार दोनों ओर कम से कम 75 मीटर तक करना जिससे कि इसमें अधिक संख्या में जलयान जेट्टी में भिड़ सकें । वर्तमान में केवल 25 मीटर वाला एक जलयान इसमें भिड़ सकता है ।
2. अवतरण केन्द्र में पाइपलाइन सहित अधिक मात्रा में ईंधन का भण्डारण का प्रावधान किया जाए तथा ठहराए गए जलयानों में पम्प से सीधे ईंधन दिए जा सकें ।
3. बर्फ बनाने, जलयानों को जलापूर्ति और संयंत्र के रख-रखाव की के लिए पेय जल की व्यवस्था की जाए । वर्षा के जल को जमा करना एक विकल्प हो सकता है जिसका उपयोग नगरपालिका क्षेत्र में पानी की कमी के समय हो सकता है । एक केन्द्रीय भण्डारण टैंक लगाया जाए जिसकी क्षमता 100,000 लिटर से कम न हो और इसके साथ विभिन्न भवनों के आस-पास 5000 लिटर वाले अतिरिक्त फीडर टैंक हो । साल में औसतन 3000 मिली मीटर वर्षा समुचित जलापूर्ति को बनाए रखने के लिए पर्याप्त होना चाहिए । ठहराए गए जलयानों में जलापूर्ति के लिए एक प्रेसर पम्प और पाइप लाइन की भी जरूरत होगी । विद्यमान जलापूर्ति को स्थानीय मछुआरों के उपयोग तथा आपातकालीन स्थितियों में संयंत्र के लिए बनाई रखी जानी चाहिए ।
4. 25 मीटर लम्बाई तक के जलयानों को ठहराने के लिए स्लिप वे सुविधाओं के निर्माण के लिए प्रावधान किया जाए । इसमें वर्कशाप की सुविधा शामिल की जाए और प्रमुख पोत तथा मशीनरी के मरम्मत के लिए आवश्यक उपकरण उपलब्ध करवाए जाए ।
5. उपयुक्त के वी.ए. के आपात डीजल पावर जेनरेटिंग सेट की आवश्यकता होगी जिससे बर्फ बनाने और शीत भण्डारण के लिए बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित हो सके ।

6. अवतरण केन्द्र के पास प्रवेश मार्ग नालियाँ और बाहरी विद्युत व्यवस्था जरूरी होगा क्योंकि इससे बड़े वाहनों के आवागमन में वृद्धि की समस्या से निपटने में सहायता मिलेगी ।

जंगलीघाट जेट्टी में प्रस्तावित सुविधाओं की रूप रेखा का विवरण परिशिष्ट 6 में दिया गया है ।

प्रस्तावित पैकिंग केन्द्र की रूप रेखा के साथ जंगलीघाट जेट्टी में उपलब्ध सुविधाओं का फोटोग्राफ परिशिष्ट-6 में दिया गया है ।

5.2 जंगलीघाट जेट्टी में चिल्ड टूना पैकिंग केन्द्र की स्थापना

भारत में टूना की फिशिंग और प्रसंस्करण आरम्भिक अवस्था में है । पोर्ट ब्लेयर से ताजे चिल्ड टूना को पैकिंग के साथ विदेश के प्रमुख मार्केट में निर्यात करना शुरू करने से इसके अधिक मूल्य मिलने की काफी गुंजाइश है । चिल्ड टूना मछली की पैकिंग के लिए यह आवश्यक है कि हैंडलिंग केन्द्र में इसका ताजापन बनाए रखने के लिए समुचित उपाय किया जाए ताकि विदेशी उपभोक्ता तक गुणवत्ता सहित उत्पाद पहुँचाना सुनिश्चित किया जा सके । वर्तमान में अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के किसी भी जगह अथवा पोर्ट ब्लेयर में इस तरह के कार्य को हाथ में लेने के लिए कोई आधारभूत सुविधा नहीं है । एक बार यदि अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के अनन्य आर्थिक क्षेत्र में मुख्यभूमि के जलयानों को चलाने की अनुमति मिल जाती है तब पकड़ी गई मछलियों को एक ही स्थान पर अवतरित किया जा सकेगा जहाँ इसे निर्यात के लिए पैक किया जा सकेगा । इसे फिशिंग बन्दरगाह और हवाई अड्डे तक आसानी से पहुँचाना भी जरूरी है ।

जंगलीघाट अवतरण केन्द्र में उपलब्ध खाली जमीन में शीत भण्डारण का निर्माण और पैकिंग सुविधा की स्थापना हो जाने पर चिल्ड सशमी ग्रेड टूना को पोर्ट ब्लेयर से निर्यात करने में काफी बढ़ावा मिलेगा । यह स्थान पोर्ट ब्लेयर हवाई अड्डे के भी निकट है और इसे सड़क से 5 मिनट के भीतर आसानी से पहुँचाया जा सकता है । जंगलीघाट अवतरण केन्द्र में माँग की पूर्ति के लिए पहले से ही पर्याप्त सुविधाएँ हैं जिनमें सॉर्टिंग हॉल, नेट मेडिंग हॉल, जल टैंक, वर्कशॉप, टॉयलेट ब्लॉकप्रसाधन आदि शामिल हैं । एक बार पैकिंग केन्द्र के स्थापित हो जाने पर एक लाख लिटर क्षमता के जल टैंक और उपयुक्त सम्प का पूरी तरह से उपयोग किया जा सकेगा । प्रस्तावित पैकिंग केन्द्र/शीत भण्डारण/बर्फ संयंत्र का एक मॉडल रेखा चित्र संलग्न है । इस सुविधा के बन जाने पर 30 मी.ट. क्षमता के चिल्ड रूम और 60 मी.ट. का शीत भण्डारण होगा । इस सुविधा में 20 मी.ट. प्रतिदिन फ्लेक बर्फ संयंत्र सहित 100 मी.ट. बर्फ भण्डार रूम शामिल हैं । पैकिंग सामग्री को मुख्यभूमि से मंगवाना पड़ेगा । चिल्ड पैकिंग केन्द्र के निर्माण की अनुमानित लागत रू. 5 करोड़ होगी ।

5.3

प्रसंस्करण आधारभूत सुविधाओं का विकास— अण्डमान मत्स्य लिमिटेड— प्रसंस्करण संयंत्र का सुधार ।

यदि निकट भविष्य में अण्डमान तथा निकोबार जल सीमा में अण्डमान टूना लॉग लाइन फिशरी को शुरू किया जाना है तो अण्डमान फिशरीज़ लिमिटेड के प्रसंस्करण संयंत्र की अस्थाई तौर पर पैकिंग सुविधा के लिए जरूरत पड़ेगी । संयंत्र विशेषतौर पर उपयुक्त नहीं है लेकिन इसमें कुछ छोटे सुधार कर इसका उपयोग किया जा सकता है । संयंत्र में कुछ सुधार कर इसे टूना हैडलिंग के उपयुक्त बनाया जा सकता है । जिनमें नए स्टेनलेस स्टील टेबल को रखना, कच्चा माल प्राप्त करने के कमरे में विद्यमान खिड़की के स्थान पर एक अलग किया हुआ स्लाइडिंग दरवाजा हो, सभी कमरों को वातानुकूलित बनाना, टूना मछलियों को उतारने के लिए फोर्क लिफ्ट ट्रक और प्रवेश मार्ग का सुधार करना शामिल है ।

वर्तमान में यह संयंत्र पर्याप्त मात्रा में कच्चे माल उपलब्ध नहीं होने के कारण अधिक सक्रिय नहीं है । एक बार कच्चे माल की आपूर्ति सुनिश्चित हो जाने पर संयंत्र की उपयोगिता क्षमता में उपयुक्त ढंग से वृद्धि हो सकेगी ।

संयंत्र का उपयोग आयातित स्थानीय फ्रोजन बेट के भण्डारण के लिए भी किया जा सकेगा ।

प्रसंस्करण संयंत्र के भीतर प्रस्तावित चिल्ड टूना पैकिंग सुविधा की रूप रेखा का विवरण परिशिष्ट—6 में दिया गया है ।

5.4

निर्यात के लिए पोत लदान

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में पोर्ट ब्लेयर ही मात्र एक हवाई अड्डा है जो मुख्यभूमि के साथ जुड़ा हुआ है । चेन्नई, कोलकाता और दिल्ली जैसे गन्तव्यों के लिए यात्री उड़ान सेवाएँ चलाई जाती हैं । यहाँ टूना फिशिंग और प्रसंस्करण विकसित हो जाने पर सशमी गुणवत्ता के चिल्ड उत्पाद को विमान द्वारा विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय गन्तव्यों जैसे बैंकाक, होंग कोंग और जापान भेजा जा सकेगा । अनुमति के अतिरिक्त यहाँ मात्र यही समस्या है अन्तर्राष्ट्रीय मालवाहक विमान के तथा चार्टर्ड विमान सेवा शामिल हैं को यह आश्वासन देना है कि उन्हें यहा आने पर न्यूनतम माल ले जाने को मिला करेगा । मालवाहक विमान विशाखापतनम या चेन्नई से माल उठा सकते हैं और पोर्ट ब्लेयर आकर यहाँ से माल का संग्रह कर विदेश जा सकते हैं ।

पोर्ट ब्लेयर में निर्यात निरीक्षण एजेन्सी और सीमा शुल्क के कार्यालयों को खोलना अन्य सुविधाओं की आवश्यकता में शामिल है ।

अध्याय— 6

नीतिगत और प्रचालन संबंधी मामले

6.1 नीतिगत मामले

द्वीपों में टूना उद्योग के विकास के लिए यह अनिवार्य है कि समय की माँग के अनुसार नीति में परिवर्तन किया जाए । दो महत्वपूर्ण मामले इस प्रकार हैं:—

1. अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के अनन्य आर्थिक क्षेत्र में मुख्यभूमि के जलयानों को फिशिंग के लिए अनुमति देना ।
2. पोर्ट ब्लेयर से अन्तर्राष्ट्रीय गन्तव्यों के लिए चार्टर मालवाहक विमान सेवा की अनुमति देना ।

6.2 प्रचालन संबंधी मामले

- मुख्यभूमि से 50 टूना लॉग लाइनर्स की शुरूआत
- वित्तीय सहायता पैकेज के माध्यम से देशी मछुआरों के लिए और भी यांत्रिक जलयानों की शुरूआत
- तकनीकी विशेषज्ञों की भर्ती और प्रशिक्षण देने वालों को प्रशिक्षण देना
- जलयान और तटों पर टूना फिशिंग, हैंडलिंग, ग्रेडिंग और पैकिंग के सभी पहलुओं का प्रशिक्षण ।
- निर्यात के लिए संभार तंत्र को प्रतिबद्ध करना जिसमें विमान वहन भी शामिल है
- निर्यात निरीक्षण एजेन्सी के माध्यम से निर्यात प्रमाणन सेवाएँ प्रदान करना ।

अध्याय—7

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में टूना फिशरीज के विकास के लिए हाथ में लिए जाने वाले प्रस्तावित क्रियाकलाप

7.1 1 अल्पावधि क्रियाकलाप

क्रम सं.	क्रियाकलाप	समय	लागत (रु.लाख में)	कार्यान्वयन एजेन्सियाँ
1.	मुख्यभूमि के जलयान को फिशिंग और बर्थिंग की अनुमति देना	30 दिन	—	अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन
2.	ए.एफ. एल के प्रसंस्करण संयंत्र में सुधार करना	60 दिन	15	एनिडको और एम.पी.इ.डी.ए.
3.	विमान माल भाड़ा के लिए अनुमति देना	30 दिन	—	अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन, सिविल विमानन और एम.पी.इ.डी.ए.
4.	टूना फिशिंग के लिए 100 देशी जलयानों में परिवर्तन	12 माह	40	अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन और एम.पी.इ.डी.ए.
5.	एफ ए डी	12 माह	100	एन.आई.ओ.टी
6.	पोर्ट ब्लेयर हवाई अड्डे पर हैंडलिंग सुविधाएँ	12 माह	150	भारतीय हवाई अड्डा प्राधिकरण और अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन
7.	क्षमता निर्माण	12 माह	50	एम.पी.इ.डी.ए.

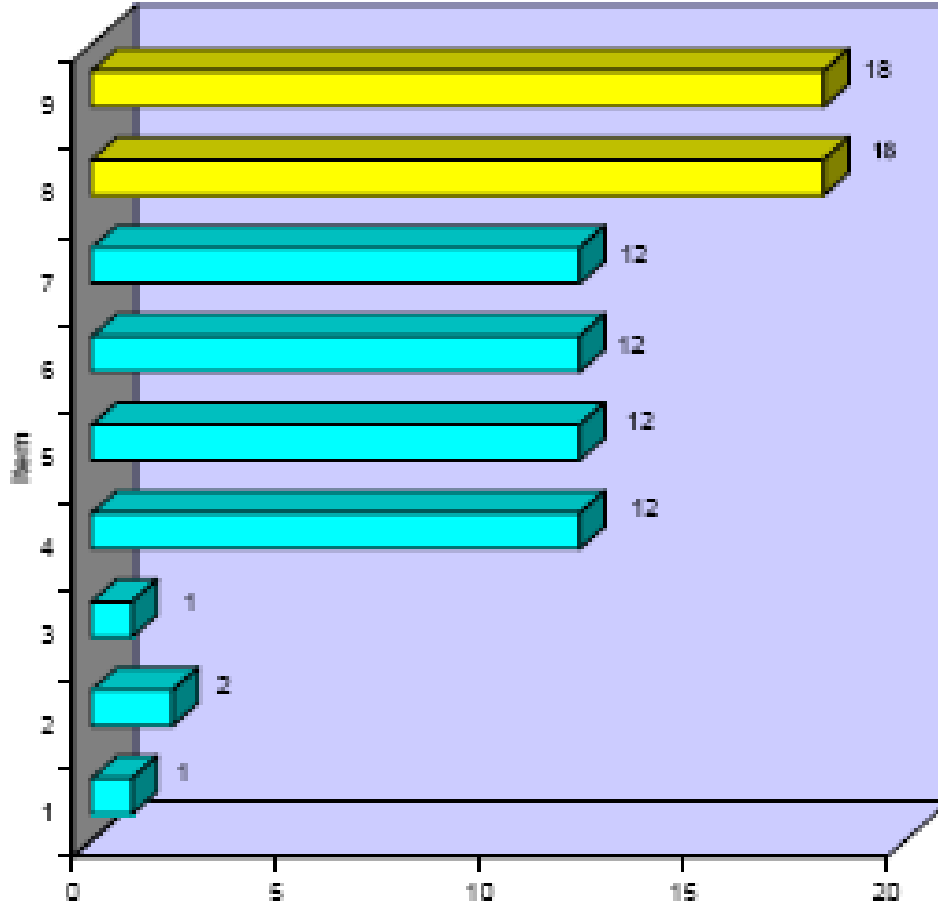
7.2 मध्यावधि क्रियाकलाप

क्रम सं.	क्रियाकलाप	समय	लागत (रु.लाख में)	कार्यान्वयन एजेन्सियाँ
1.	जंगलीघाट जेट्टी का विस्तार	18 माह	500	अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन
2.	जंगलीघाट जेट्टी में चिल्ड टूना पैकिंग सुविधा की स्थापना	18 माह	500	अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन और एम.पी.इ.डी.ए.

7.3 अपेक्षित निधि

कार्य	लागत (रु. लाख में)	निधि के स्रोत
ए एफ एल के प्रसंस्करण संयंत्र में परिवर्तन	15	एनिडको
जंगलीघाट जेट्टी में चिल्ड टूना पैकिंग सुविधा की स्थापना	500	एम ओ सी आई / ए एस आई डी ई
टूना फिशिंग के लिए 100 देशी जलयानों का परिवर्तन	40	एम.पी.इ.डी.ए.
एफ ए डी	100	एन आई ओ टी और अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन
क्षमता निर्माण	50	एम.पी.इ.डी.ए.
जंगलीघाट जेट्टी का विस्तार	500	एन एफ डी.बी
पोर्ट ब्लेयर हवाई अड्डे पर हैंडलिंग सुविधा	150	ए एस आई डी ई
कुल	1355	

7.4 परियोजना कार्यान्वयन के लिए समय



अल्पावधि नीति

माह

- | | |
|----------|----------------------------------------------------------|
| मद सं. 1 | मुख्यभूमि के जलयानों के लिए फिशिंग और बार्थिंग की अनुमति |
| मद सं. 2 | ए.एफ.एल के प्रसंसकरण संयंत्र में सुधार |
| मद सं. 3 | विमान माल भाड़ा के लिए अनुमति |
| मद सं. 4 | टूना फिशिंग के लिए 100 देशी जलयानों में सुधार |
| मद सं. 5 | एफ.ए.डी |
| मद सं. 6 | पोर्ट ब्लेयर हवाई अड्डे पर हैंडलिंग सुविधाएँ |
| मद सं. 7 | क्षमता निर्माण |

मध्यावधि नीति

- | | |
|----------|--------------------------------------------------------|
| मद सं. 8 | जंगलीघाट जेट्टी का विस्तार |
| मद सं. 9 | जंगलीघाट जेट्टी पर चिल्ड टूना पैकिंग सुविधा की स्थापना |

7.5 परिणाम

परियोजना के प्रत्याशित परिणाम

क्षेत्र	रोजगार सृजित (श्रम दिनों में)	मछुआरों को अतिरिक्त आय	निर्यात आय
परम्परागत	1,00,000	रु. 10 करोड़	रु. 32 करोड़
यांत्रिक	60,000	रु. 45 लाख	रु. 128 करोड़
सम्बद्ध क्षेत्र	1000		

पूर्व अनुमान: 200 दिनों के लिए 50 यांत्रिक जलयान और 100 परम्परागत मत्स्य जलयान

7.6 लाभ और प्रभाव

परियोजना के एक बार कार्यान्वित हो जाने पर द्वीपसमूह में प्रौद्योगिकी, सामाजिक, पर्यावरणात्मक और आर्थिक विकास में इसका काफी समय तक स्थाई रूप से प्रभाव बना रहेगा । द्वीपों में आधुनिक मत्स्य जलयान और पर्यावरण हितैषी मत्स्य उपकरण की शुरुआत एक और लाभप्रद पहलु है । मत्स्य से सम्बद्ध अन्य स्थानीय लोग और मछुवारों की क्षमता का विस्तार करने से स्थानीय लोगों को मत्स्य प्रसंस्करण और विपणन के जरिए कई अवसर उपलब्ध होंगे । मत्स्य उत्पादन में वृद्धि सहित रोजगार के और भी अवसर मिलेंगे और अन्य सम्बद्ध सहायक उद्योगों के विकसित होने पर अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के इतिहास में एक नए युग का शुभारम्भ निश्चित रूप से होगा । प्रत्याशित परिणाम से इन सभी सुविधाओं पर खर्च होने वाली राशि नगण्य हो जाएगी और द्वीपों में निवेश के लिए मुख्यभूमि से उद्यमियों को आकर्षित किया जा सकेगा । अन्तर्राष्ट्रीय मालवाहक विमान सेवा की शुरुआत द्वीपों के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी ।

परिशिष्ट- 1

अध्याय- 1 तालिका -1: अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में मत्स्य फिशिंग के विस्तृत तथ्य और आँकड़ा

क्रम सं.	मद	2006-07			
		दक्षिण अण्डमान जिला	उत्तर तथा मध्य अण्डमान जिला	निकोबार जिला	कुल
1.	फिशिंग में लगे मछुवारों की संख्या	2705	1957	955	5617
2.	फिशिंग देशी जलयान	561	746	217	1524
3.	उपयोग में लाए जाल की संख्या	9633	6065	6710	22408
क)	गिल नेट	2075	1680	532	4287
ख)	शोर सिआइन नेट	8	5	0	13
ग)	एंकर नेट	5	3	0	8
घ)	कास्ट नेट	1695	527	128	2350
ड.)	हूक और लाइन	5850	3850	6050	15750
च)	ट्रालिंग	0	0	0	0
छ)	डिस्को नेट	0	0	0	0
4.	यांत्रिक फिशिंग जलयान (सं.)				
क)	देशी जलयान	561	746	217	1524
ख)	यांत्रिक बोट				
1)	मोटराइज्ड ट्रेडिशनल फिशिंग	703	267	309	1279
11)	मोटराइज्ड बोट	10	0	0	10
5.	प्रतिदिन (लिटर में) प्रति जलयान औसतन ईंधन की खपत				
1)	मोटराइज्ड बोट	20 लिटर/दिन	20 लिटर/दिन	15 लिटर/दिन	18.33 लिटर/दिन
11)	यांत्रिक बोट	0	0	0	0
6.	मार्च के अंत तक बसाए गए मछुआरा परिवार (सं.)	187	116	19	322
7.	वर्ष के दौरान वितरित औसत मत्स्य सामग्रियाँ (रु. लाख में)	0.75	0.25	1.93	2.93

परिशिष्ट—2
समुद्री संसाधन

अध्याय— 1 तालिका—2

क्रम सं.	मछली वर्ग	सम्भावी (मी.टन में)	वर्तमान में मछली पकड़ना (मी. टन में)
1	मैकेरेल	5000	3000
2.	लेस्सर सारडीनेस	10000	5736
3.	एनकोविस	1000	153
4.	अन्य क्लूपिड्स	10,000	7337
5.	करनागिड्स	1000	1070
6.	सीयर फिश	5000	1236
7.	पेलाजिग शार्क	5000	7000
8.	कोस्टल टूनास	100000	2068
9.	अन्य	2000	1000
कुल		139000	28600

अध्याय—1 तालिका—3 वर्ष 1981—2006 में अण्डमान तथा निकोबार में समुद्री मछली का अवतरण

वर्ष	मछली का अवतरण (टन)
1981	1910
1982	3879
1983	3868
1984	6226
1985	4458
1986	10638
1987	8865
1988	11210
1989	14818
1990	13530
1991	22339
1992	25406
1993	23334
1994	26695
1995	26120
1996	26551
1997	24974
1998	28983
1999	26873
2000	30339
2001	27173
2002	25561
2003	26731
2004	26300
2005	27000
2006	28600

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

अध्याय-1. तालिका : 4 : वर्ष 2006-07 के दौरान अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह में प्रजातिवार मछली अवतरण

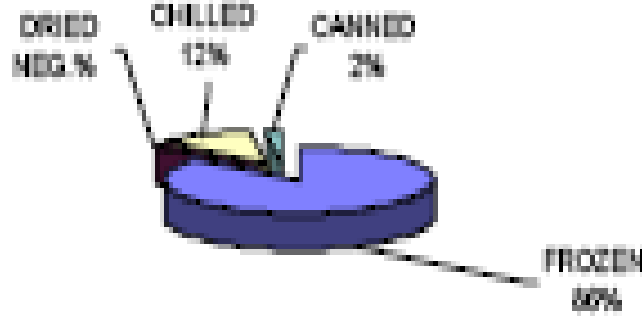
क्र.सं.	प्रजातियाँ / समूह	मैट्रीक टन
1.	इलास्मो ब्रांच्स	2220
2.	सिल्वर बेल्लिस	2962
3.	परचस	5537
4.	पॉम्फ्रेट	309
5.	केट फिश	270
6.	थ्रेड फिन्स	80
7.	क्रोकर्स	890
8.	गोट फिश	9
9.	सिल्वर ग्रन्ट	8
10.	थ्रेडफिन ब्रिम्स	247
11.	लिजार्ड फिश	10
12.	फ्लैट फिश	10
13.	सिफालोपोड्स	45
14.	पिनेड शिम्प्स	565
15.	क्रैब	513
पिलेजिक संसाधन		
16.	एंकोविज	2337
17.	सरडार्डिन्स	3600
18.	हिल्सा	153
19.	उल्फेरिंग	75
20.	मेकरेल	2000
21.	राउण्ड पर्च	175
22.	अदर केरनगिड्स	1070
23.	रिबन फिश	235
24.	हॉफ बिक्स एण्ड फुल बिक्स	294
25.	बार्कूडा	611
26.	मुलेट्स	938
27.	सियर फिश	1236
28.	कोस्टल टूना	2068
महासागरीय संसाधन		
29.	एलोफिन टूना	2
30.	स्कीपजैक	1
31.	बिल फिशेस	1
32.	पिलेजिक शार्क	7
	कुल	28600

परिशिष्ट – 3

अध्याय-1. तालिका : 5 : विभिन्न रूपों में टूना मछली के प्रमुख उत्पाद का निर्यात

मदों के नाम	2006-07			2005-06		
	मात्रा टन में	मूल्य रु. लाख में	डॉलर मिलियन में	मात्रा टन में	मूल्य रु. लाख में	डॉलर मिलियन में
फ्रोजन	22765	11406.58	25.36	16617	6913.34	15.64
ड्राइड	18	39.82	0.09	2	6.94	0.02
चिल्ड	758	1345.21	3.54	9	10.79	0.02
कैन्ड	248	246.65	0.55	0	0.00	0.00
कुल	23788	13038.30	29.54	16627	6931.07	15.68

मद सं 1.5:चित्र 1 : वर्ष 2006-07 के दौरान निर्यातित विभिन्न रूपों में टूना मछली के प्रमुख उत्पाद पर डॉलर के रूप में आमदनी



अध्याय-1. तालिका : 6 : वर्ष 2006-07 के दौरान मदवार टूना मछली का निर्यात

मद	2006-2007				2005-2006		
	मात्रा टन में	मूल्य रु. लाख में	अमेरिकन कन डॉलर मिलि यन में	इकाई मूल्य डॉलर प्रति किलोग्राम	मात्रा टन में	मूल्य रु. लाख में	अमेरिकन डॉलर मिलियन में
चिल्ड टूना	625.3	1082.44	2.95	4.72	9.00	10.79	0.02
चिल्ड एलो फिन टूना	108.74	206.99	0.46	4.26	0	0	0
चिल्ड एलो फिन टूना लोइंस	18.5	47.89	0.11	5.77	0	0	0
चिल्ड टूना (गाटेड)	5.14	7.89	0.02	3.48	0	0	0
चिल्ड टूना कुल	758	1345.21	3.54	4.67	9.00	10.79	0.02
फ्रोजन टूना (एलो फिन)	13669	7097.38	15.7	1.15	9311	3978.95	9.01
फ्रोजन टूना (स्कीप जैक)	5814	2,339.19	5.24	0.9	5774	1982.46	4.50
फ्रोजन टूना (बिग आई)	147	60.3	0.13	0.9	233	79.93	0.18
फ्रोजन टूना (लॉग टेल)	489	221.4	0.5	1.02	322	112.77	0.25

फ़ोजन टूना (होल)	1092	605.13	1.35	1.24	817	605.12	1.36
फ़ोजन टूना (टॉंगोल)	56	25.03	0.05	0.97	71	25.32	0.06
फ़ोजन टूना (लोइंस)	201	283.86	0.64	3.16	25	58.61	0.13
आई क्यू. एफ फिश स्टीक (टूना)	50	50.88	0.11	2.26	1	1.14	0.00
फ़ोजन टूना (क्यूब्स)	1	0.58	0	2.6	0	0.15	0.00
आई क्यू. एफ टूना (स्कीप जैक)	535	218.4	0.49	0.91	0	0	0
आई क्यू. एफ एलो फिन टूना	450	316.8	0.72	1.6	0	0	0
फ़ोजन टूना बैली फ्लेप्स	2	1.31	0	1.48	0	0	0
फ़ोजन टूना (गाटेड)	259	186.36	0.42	1.63	0	0	0
फ़ोजन टूना फिल्लेट	0	0	0	0	63	68.88	0.15
फ़ोजन टूना कुल	22765	11406.62	25.35	1.11	16617	6913.34	15.64
स्मोक्ड फ़ोजन एलो फिन टूना लोइंस	18	39.78	0.09	4.97	0	0	0
कैन्ड टूना	248	246.65	0.55	2.22	0	0	0
ड्राइड टूना फ्लेक्स	0	0.04	0	2.25	2	6.94	0.02
कुल	23788	13038.3	29.54	1.24	16627	6931.07	15.68

अध्याय-1. तालिका : 7 : वर्ष 2005-06 तथा 2006-07 के दौरान देश-वार टूना मछली का निर्यात

देश का नाम	2006-07			2005-06		
	मात्रा टन में	मूल्य रू. लाख में	डॉलर मिलियन में	मात्रा टन में	मूल्य रू. लाख में	डॉलर मिलियन में
जापान	618	1090.09	2.96	326	350.55	0.78
संयुक्त राष्ट्र अमेरिका (यु. एस. ए)	117	261.41	0.59	86	144.60	0.32
यूरोपियन यूनियन	2813	1825.37	4.08	282	133.66	0.30
चीन	111	42.64	0.09	12	9.64	0.02
दक्षिणी पूर्व एशिया	3132	1773.25	3.91	7573	2996.47	6.81
मध्य पूर्व	2077	1048.30	2.34	334	131.54	0.30
अन्य	14921	6997.24	15.57	8014	3164.62	7.15
कुल	23788	13038.30	29.54	16627	6931.07	15.68

अध्याय-1. तालिका : 8 : वर्ष 2005-06 तथा 2006-07 के दौरान बंदरगाह-वार टूना मछली का निर्यात

	2006-07			2005-06		
	मात्रा टन में	मूल्य रु. लाख में	डॉलर मिलियन में	मात्रा टन में	मूल्य रु. लाख में	डॉलर मिलियन में
कोची	11888	6752.28	14.94	7718	3208.92	7.28
पिपावाव	5971	2610.53	5.87	4050	1490.84	3.37
चैन्नई	2323	1680.18	4.29	1507	826.40	1.86
मुंदरा	1467	619.58	1.38	1652	618.69	1.39
जे एन पी	1318	579.10	1.28	529	197.69	0.45
त्रिवेन्द्रम	161	386.30	0.86	6	6.47	0.01
वैजाक	539	319.53	0.71	960	433.85	0.98
मैंगलूर/आईसीडी	105	71.89	0.16	34	13.69	0.03
मुंबई	15	17.83	0.04	0	0.00	0.00
तूतीकोरिन	1	1.05	162	125.80	0.28	0.00
कालीकट	0	0.02	0.00	0	0.00	0.00
कोलकता	0	0.00	0.00	11	8.72	0.02
कुल	23788	13038.30	29.54	16627	6931.07	15.68

अध्याय-1. तालिका : 9 चिल्ड टूना मछली का मदवार निर्यात विवरण

	2006-07			2005-06		
	मात्रा टन में	मूल्य रु. लाख में	डॉलर मिलियन में	मात्रा टन में	मूल्य रु. लाख में	डॉलर मिलियन में
चिल्ड टूना	625	1082.44	2.95	9	10.79	0.02
चिल्ड एलो फिन टूना	109	206.99	0.46	0	0.00	0.00
चिल्ड एलो फिन टूना लोइंस	18	47.89	0.11	0	0.00	0.00
चिल्ड टूना (गाटड)	5	7.89	0.02	0	0.00	0.00
कुल	758	1345.21	3.54	9	10.79	0.02

अध्याय-1. तालिका : 10 बंदरगाह-वार चिल्ड टूना मछली का निर्यात

	2006-07			2005-06		
	मात्रा टन में	मूल्य रु. लाख में	डॉलर मिलियन में	मात्रा टन में	मूल्य रु. लाख में	डॉलर मिलियन में
चैन्नई	446	660.86	2.01	1	0.44	0.00
त्रिवेन्द्रम	161	385.55	0.86	6	6.46	0.01
कोची	140	284.74	0.64	2	3.89	0.01
मुंबई	12	14.06	0.03	0	0.00	0.00
कुल	758	1345.21	3.54	9	10.79	0.02

अध्याय-1. तालिका : 11 चिल्ड टूना मछली का देश-वार निर्यात

देश का नाम	2006-07			2005-06		
	मात्रा टन में	मूल्य रु. लाख में	डॉलर मिलियन में	मात्रा टन में	मूल्य रु. लाख में	डॉलर मिलियन में
जापान	539	992.03	2.75	7	8.49	0.02
श्रीलंका	162	153.19	0.35	1	0.41	0.00
सिंगापुर	14	83.83	0.19	1	1.76	0.00
संयुक्त राष्ट्र अमेरिका	17	51.05	0.11	0	0	0
फ्रांस	19	49.59	0.11	0	0	0
नीदरलैंड	4	10.87	0.02	0	0	0
संयुक्त अरब अमीरात	2	3.52	0.01	0	0	0
यू. के.	0	0.81	0.00	0	0.09	0.00
जर्मनी	0	0.18	0.00	0	0.00	0.00
आस्ट्रिया	0	0.09	0.00	0.00	0.00	0.00
स्वीटजरलैंड	0	0.05	0.00	0.00	0.00	0.00
थाईलैंड	0	0.03	0.00	0	0.00	0.00
मालदीव	0	0.01	0.00	0	0.00	0.00
कुल	758	1345.21	3.54	9	10.79	0.02

परिशिष्ट – 5

अध्याय – 4 तालिका – 12: टूना लॉग लाइनिंग कन्वर्सन के लिए तैयार जलयानों का विवरण

उत्पादन क्षमता	विद्यमान पकड़ी गई मछली की मात्रा	विवरण	सं.	औसतन मात्रा/जलयान/ट्रीप	प्रति जलयान/ वर्ष के अनुसार मछली पकड़ने का औसतन मात्रा (10 माह के लिए)	कुल पकड़ी गई मछली
पिलेजिक टूना 100000 मि. टन	20 % 20000 मि. टन	विद्यमान जलयान को वर्टिकल टूना लॉग लाइनिंग के लिए फ्रोजन. पी. कोटेड मोटर युक्त जलयान में बदलना ।	100	70 कि. ग्रा	7 मि. टन	1400 मि. टन

पूर्वानुमान:

उन्नत मोटरयुक्त जलयान प्रति माह 20 ट्रीप लगाएगी है और प्रत्येक ट्रीप में औसतन लगभग 70 किलोग्राम मछली लाएंगी है, अर्थात् 20 ट्रीप x 10 माह x 70 कि. ग्रा. = 14 मि. टन/जलयान/वर्ष ।

अध्याय – 4 मूल्यवान टूना उत्पादों के प्रसंस्करण का विवरण

टूना प्रसंस्करण उद्योग पिछले दशकों में काफी तेजी से बढ़ी है । परम्परागत संसाधित उत्पादों जैसे धूमित/डिब्बाबंदी/फ्रोजन उत्पादों के अलावा अब सशिमी और सुशी उत्पादों के लिए प्राइम क्वालिटी फ्रेश टूना मीट की मांग में बढ़ोतरी हुई है जिसकी जापानी मार्केट में अधिक कीमत मिलती है । सशिमी एक प्रसिद्ध जपानी पकवान है जो उत्तम क्वालिटी के टूना मछली-मांस से खाने के आकार के टुकड़ों में बनाया जाता है । सशिमी का अर्थ होता है ताजे समुद्री खाद्य पदार्थ से बेहतर, क्योंकि यह आकृति ताजेपन, बनावट, स्वाद तथा परोसने को भी दर्शाता है । सशिमी के लिए प्रयोग की जाने वाली अत्यधिक कॉमन मछली यलो फिन टूना तथा बिग आई टूना है । मात्र उत्तम क्वालिटी के चुनिन्दा टूना ही सशिमी के लिए उपयुक्त होता है । टूना को पकड़ने की पद्धति तथा उसको हैण्डल करने की प्रक्रिया सशिमी के लिए टूना की क्वालिटी की निर्धारण में अहम भूमिका अदा करते हैं । टूना को तत्काल मार दिया जाना चाहिए तथा उसकी ताज़गी बनाए रखने के लिए उचित संरक्षण किया जाना चाहिए । केन्द्रीय नर्वस सिस्टम को तेजी से खराब होने से रोकने को सुनिश्चित करने के लिए तत्काल मारना आवश्यक है, जो कि शारीरिक तापमान को नियंत्रित करता है ताकि मछली की तापमान को चिल्ड/फ्रोजन स्टोरेज के दौरान तत्काल कम किया जा सके ।

फिलहाल में सशिमी ग्रेड के टूना मछलियों का औसतत कीमत जपानी मार्केट में 10-12 यू.एस. डालर है । तथापि चिल्ड सशिमी क्वालिटी टूना के पैकिंग के लिए बड़े लैण्डिंग सेन्ट्रो पर हैण्डलिंग के ढांचागत सुविधाओं की कमी एक मुख्य बाधा है । चिल्ड सशिमी क्वालिटी टूना का तापमान 2-3 के बनाए रखते हुए उपभोक्ता के पास पहुँचन होता है ।

अध्याय 4 – सशिमि को तैयार करना

अच्छी गुणवत्ता वाले सशिमि को बनाने के लिए टूना को पकड़ने के बाद उचित प्रकार से चिल्ड किया जाना होता है। ताजी चिल्ड सशिमि अल्ट्रा कम तापमान पर फ्रोजन टूना के मुकाबले अच्छे मूल्य पर बिकती है। अच्छी तरह चिल्ड करने के बाद ताजी टूना को सशिमि के लिए 3 सप्ताह तक उपयोग किया जा सकता है। सम्पूर्ण टूना को एक इन्सूलेटेड बॉक्स में तब तक रखना अनिवार्य है जब तक कि इस यह काट नहीं जाता।

अध्याय 4 – टूना का ड्रेसिंग

टूना मछली का ड्रेसिंग इस प्रकार की जाती है :-

- मछली को एक साफ कटिंग बोर्ड पर सर के साथ रखें।
- पेक्टोरल फिन को पकड़कर मछली थोड़ा ऊपर उठाएँ पेक्टोरल फिन के नीचे से छुरी से नीचे की ओर डोरसल लाइन तक काटें और छुरी को धीरे-धीरे ओपरकुलम तक ले जाए।
- इस्तमस के पीछे से पेक्टोरल फिन तक काटें और फिर ओपरकुलम तक पूरा काटें। कभी-कभी इस्तमस से काट कर पेलविक फिन हटा दिया जाता है। अब मछली पलट ले और मछली को उपर्युक्त तरीके से फिर काटें। इसके बाद बड़ी छुरी अथवा हेकसाँ के इस्तेमाल से रीढ़ की हड्डी तथा मछली के सर को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें।
- पूर्ण रूप से साफ किए गए टूना मछली चौकोर टुकड़ों में तेज छुरी से ऐसा काटें कि रीढ़ की हड्डी तक पहुँचे और फिर डोरसल लाइन तक काटे।
- चार चौकोर टुकड़ों को अब ध्यानपूर्वक पतले टुकड़ों में काट लें। खुदरा बाजार के लिए एक चौकोर टुकड़ा 300-400 मी. मी. तक की लम्बाई में काटें। उचित चिल्लिंग कन्डीशन के तहत इन टुकड़ों का भंडारण एक सप्ताह तक किया जा सकता है। ताजे टूना के टुकड़ों को सुशी पकवान के लिए 10 मी. मी के आकार में तिरछे में दाएँ से बाएँ की ओर काटा जाता है। काटते समय ध्यान रखना चाहिए कि काटने के दौरान यह पतले-पतले मछली के टुकड़े टूट न जाएँ।

अध्याय 4 – अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए टूना उत्पाद

- चिल्ड डिहेडड और गट्ट अथवा गिल्ड और गट्ट (सशिमि)
- फ्रोजन डिहेडड और गट्ट अथवा गिल्ड और गट्ट (सशिमि)
- डिब्बा बंद "सोलिड पेक्स" (टूना मछली के टुकड़ों का मिश्रण)
- डिब्बा बंद "चंक्स" (टूना मछली के टुकड़ों का मिश्रण)
- डिब्बा बंद "पलेक्स" (टूना मछली के टुकड़ों का मिश्रण)
- डिब्बा बंद "ग्रेटड" (टूना पैक किया हुआ टुकड़ा)
- डिब्बा बंद उत्पादों को तेल, ब्राइन अथवा सॉस में पैक किया जाता है। डिब्बा बंद करने में नमक, मोनो सोडियम ग्लूटामेट हाइड्रोलाइज्ड प्रोटीन और विभिन्न मसालों का प्रयोग किया जाता है।

अध्याय – 4 अन्य मूल्यवान टूना उत्पाद

• फ्रोजन कुकड टूना लोइन्स	• टूना बोलोग्ना
• फ्रेश/फ्रोजन टूना स्टीक	• टूना हाम
• टूना बरगर्स	• टूना स्टॉक
• टूना जरकी	• टूना सॉस
• टूना केन्डी	• ड्राइड टूना
• टूना आईसक्रीम	• टूना लोफ
• टूना बोन पाऊडर	• साल्टेड टूना
• टूना फ्लोस	• पिकल्ड टूना
• टूना बाइट्स	• टूना पेस्ट
• टूना केसेरोल/पाई	• स्मोक्ड टूना
• टूना सॉसेज	

परिशिष्ट – 6

अध्याय – 5

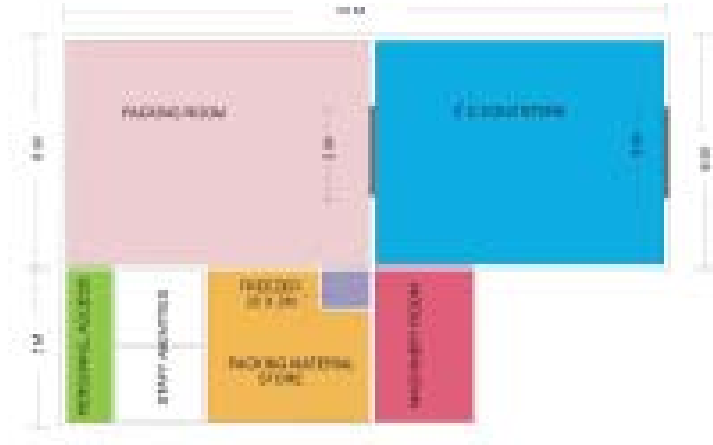
जंगलीघाट अवतरण सुविधा



1. जट्टी
2. प्रस्तावित जट्टी विस्तार
3. बोट लैंडिंग रैम्प
4. नीलाती हॉल तथा प्रशासनिक भवन
5. कार्यशाला
6. जाल मरम्मत हॉल
7. शौचालय ब्लॉक
8. पानी टंकी
9. पम्प हाऊस
10. गेट हाऊस
11. पैकिंग प्लांट, कोल्ड स्टोरेज तथा आइस एम./सी. के लिए प्रस्तावित स्थल
12. सड़क

जंगलीघाट जट्टी में प्रस्तावित पैकिंग केन्द्र

प्रस्तावित पैकिंग केन्द्र



परिशिष्ट – 7



Junglighat landing center



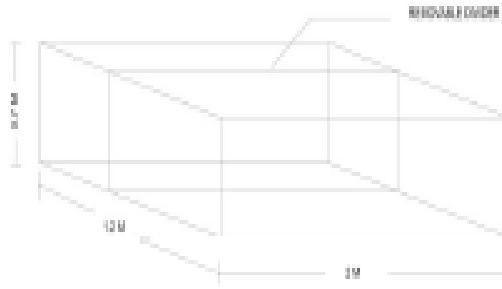
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

मोटाराइज़ देशी जलयान



मोटाराइज़ जलयानों के लिए इन्सुलेटड टूना बॉक्स

व्यवस्था चित्र



मोटाराइज़ परम्परागत जलयानों के लिए टूना बॉक्स

अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की व्यापक समुद्री मत्स्यहरण नीति (उद्धरण)

- लक्षद्वीप की तुलना में अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह महासागरीय से प्रकृति का है, तथा इसकी उत्पत्ति ज्वालामुखी से हुई हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ छोटे-छोटे पर्वत तथा घाटियाँ भी हैं। इन द्वीपों का कुल तटीय क्षेत्र 1912 कि. मी. है तथा यहाँ की भूमि का क्षेत्रफल 3500 वर्ग कि. मी. है। यहाँ की अनन्य आर्थिक क्षेत्र लगभग 6 लाख वर्ग कि. मी. है जो देश की कुल अनन्य आर्थिक क्षेत्र का 28 प्रतिशत है। यहाँ की कुल जनसंख्या 3.56 लाख है, जिसमें से लगभग 2500 पूर्णकालिक मछुआरे हैं तथा 400 अंशकालिक मछुआरे हैं, जो समुद्री मछली पकड़ने के कार्य में लगे हैं। वर्तमान में यहाँ 28000 मिट्रीक टन मछली पकड़ी जाती है जो यहाँ की 2.43 लाख टन मछली क्षमता का मात्र 11 प्रतिशत है।
- मछली का सम्भावित का उपलब्धता तथा इसके उत्पादन में काफी असमानता के अलावा द्वीपों की समर्थता इसकी सम्पन्न समुद्री जैव-विविधता, भौगोलिक स्थिति, दक्षिण पूर्वी एशियन बाजारों तथा उद्यमियों से नजदीक होने के कारण है।
- नवीकृत फाइबर ग्लास क्राफ्ट तथा नवीकृत गियरो और इंटरमिडियेट क्लास की मत्स्य हरण जलयानों की शुरुआत करने से तटीय क्षेत्र में मत्स्यहरण का आगे और विकास हो सकता है।
- गहरे समुद्र में मछली पकड़ने के लिए बड़े मत्स्यहरण जलयानों की शुरुआत करने से गहरे समुद्री क्षेत्र में मत्स्यहरण का विकास हो सकता है।
- पहचान किए हुए द्वीपों में मत्स्यहरण तथा इसके बाद के कार्यों के लिए ढाँचागत सुविधाओं का विकास किए जाने की आवश्यकता है।
- इन द्वीपों में रोजगार के लिए क्षमता बढ़ाने की दृष्टि से मत्स्यहरण तथा इसके बाद के कार्यों के लिए पैकेज प्रस्तावों पर संयुक्त प्रयास आरंभ करने की अनुमति प्रदान की जाए।
- निवेश बढ़ाने के लिए कैम्पबेल बे में एक बड़ा फिशिंग हार्बर तथा प्रोसेसिंग काम्प्लेक्स की स्थापना किए जाने की आवश्यकता है।
- मत्स्य संसाधन तथा इसकी स्वास्थ्य संबंधी स्थिति पर लगातार निगरानी रखने के लिए प्रणालीबद्ध तरीके से मत्स्य संसाधन संबंधी सर्वेक्षण करवाने की आवश्यकता है।
- इस क्षेत्र में विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक कुशल जनशक्ति को विकसित करने के लिए मानव संसाधन विकास को प्राथमिकता दिए जाने की आवश्यकता है।

**अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के एम. एफ. आर एक्ट की प्रमुख विशेषताएँ
मत्स्यहरण जलयानों का पंजीकरण**

(क) इस संघ राज्य क्षेत्र के प्रत्येक मत्स्यहरण जलयान के मालिक तथा या जिसका प्रयोग इन नियमों के नियम 5 के उप-नियम (क) के तहत विनिर्दिष्ट विशिष्ट क्षेत्र में मत्स्यहरण के लिए किया जाता हो या प्रयोग किए जाने के लिए विचारार्थ है, वे धारा 9 के तहत अपनी जलयानों का पंजीकरण कराएंगे, यदि लागू फिलहाल किसी अन्य कानून के तहत जलयान का पहले ही मत्स्यहरण जलयान के रूप में पंजीकरण नहीं किया गया हो।

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

(ख) सरकार द्वारा निर्धारित अनुसार समुद्र में प्रचालन के समय सभी श्रेणी अथवा श्रेणियों के मत्स्यहरण जलयानों में निर्धारित जीवनरक्षण उपकरण तथा आग बुझाने के उपकरणों होना चाहिए ।

मत्स्यहरण जलयानों का लाइसेंस

1. समुद्री मत्स्यहरण नियम की धारा 6 के तहत प्रदान की गई वैद्य लाइसेंस के बिना कोई भी मत्स्यहरण जलयान मछली पकड़ने संबंधी किसी भी प्रकार का क्रियाकलाप नहीं करेगा ।
2. विनियम के प्रयोजन हेतु जब तक जलयान का मत्स्यहरण जलयान के रूप में पंजीकरण नहीं किया जाएगा, इसके लिए मत्स्यहरण लाइसेंस नहीं दिया जाएगा ।
3. किसी भी मैकानाइज्ड मत्स्यहरण जलयान को तब तक मत्स्यहरण लाइसेंस नहीं दिया जाएगा जब तक कि इसका व्यावसायिक कारणों से होने वाले हानियों के लिए पर्याप्त बीमा कवरेज करवा लिया गया हो ।
4. मत्स्यहरण जलयान के मालिक, इस बात पर विचार किए बिना कि उसका जलयान मैकानाइज्ड है अथवा गैर-मैकानाइज्ड है, किसी भी मछुआरा या नाविक को जलयान में सवार नहीं करेगा या काम पर रखने की अनुमति नहीं देगा या सवार होने की अनुमति नहीं देगा जब तक कि उक्त मछुआरा अथवा नाविक का व्यावसायिक कारणों से होने वाले हानियों के लिए पर्याप्त बीमा कवरेज करवा लिया गया हो ।

विभिन्न श्रेणी के मत्स्यहरण जलयानों द्वारा मछली पकड़ने के लिए विनिर्दिष्ट क्षेत्र

	मत्स्यहरण के लिए विनिर्दिष्ट क्षेत्र	मत्स्यहरण जलयानों की श्रेणी	प्रयोग हाने वाले गियर/मेश साइज का प्रकार
(i)	मत्स्यहरण क्षेत्र – ए (उचित बेसलाइन से 6 नॉटिकल मील तक समुद्री जल क्षेत्र)	परंपरागत तथा गैर-मैकानाइज्ड बोट सहित 30 होर्स पावर इंजिन वाले जलयानएँ	(i) 25 एम एम मेश से कम गिल नेट (दोनों सिरे से गॉठ लगाकर जुड़ा हुआ) (ii) हुक तथा लाइन (iii) शोर सिने/मेश का ड्रेग नेट जिसका आकार 25 एम. एम से कम न हो । (iv) फिश ट्रेप्स
(ii)	मत्स्यहरण क्षेत्र – बी (उचित बेस लाइन से 6 नॉटिकल मील से आगे का समुद्री जल क्षेत्र)	30 होर्स पावर से अधिक के इंजिन वाले जलयानएँ	(i) 25 एम एम मेश से कम का गिल नेट (ii) ट्राल नेट के लिए उपयुक्त टरटल एक्सक्लूडर डिवाइस वाले स्टेन्डर्ड मेश आकार का ट्राल नेट (iii) लॉग लाइन, पर्स सिने, स्कुइड जिग्गर (iv) हुक तथा लाइन

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

फिश कल्चर तथा फिश एग्रीगेटिंग उपकरणों के लिए समुद्री जल क्षेत्र को पट्टे पर देना

इसके लिए गठित समिति के सिफारिश के आधार पर समुद्री जल क्षेत्र को पट्टे पर देने के लिए मत्स्य निदेशक, अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह लीजिंग अधिकारी होंगे ।

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

चयनित व्यक्तियों, फर्मों तथा संगठनों को समुद्री जल क्षेत्र को पट्टे पर देते समय पट्टे पर देने तथा परियोजना का कार्यान्वयन तथा निगरानी की शर्तों का निर्धारण मत्स्य निदेशक द्वारा किया जाएगा ।

द्वीपों से मछली अथवा मत्स्य उत्पादों को लाना/ले जाना

1. कोई भी ऐसा व्यक्ति, व्यवसायी, मछली विक्रेता अथवा संगठन, जो द्वीपसमूह की क्षेत्राधिकार के बाहर मछली अथवा मत्स्य उत्पादों को ले जाने जैसी गतिविधि से जुड़ा है, वह संबंधित क्षेत्र के प्राधिकृत अधिकारी के पास अपना नाम दर्ज करवा कर इन नियमों के साथ संलग्न अनुसूची – VI में निर्धारित अनुसार, मत्स्य निदेशक को रॉयल्टी का भुगतान करेगा ।
2. मद्रास निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्र द्वारा जारी वैध हरे कार्ड रखने वाले 100 प्रतिशत निर्यात उन्मुख इकाईयाँ, जिनकी द्वीपों में पोजेक्ट बेस संस्थापना है उन्हें रायल्टी का भुगतान करने की छूट दी गई है । तथापि इन इकाईयाँ के निर्यात खेप का विवरण देना होना तथा खेप आधार पर मत्स्य निदेशक से अनापत्ति प्रमाण पत्र लेकर देना होगा ।
3. इन नियमों के तहत जारी मत्स्यहरण लाइसेंस के अनुसार अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के समुद्री जल क्षेत्र के भीतर गहरे समुद्र में मछली पकड़ने वाले सभी मत्स्यहरण जलयानों प्रत्येक यात्रा के बाद पकड़ी गई कुल मछली में से एक निर्धारित मात्रा अंडमान तथा निकोबार मत्स्य सहकारी संघ लिमिटेड अथवा द्वीपसमूह में स्थापित मत्स्य प्रसंस्करण उद्योगों को स्थानीय बाजार में चल रही थोक बाजार मूल्य पर बेचेगा, अन्यथा उन्हें अंडमान तथा निकोबार प्रशासन द्वारा इस बारे में छूट दिया गया हो ।

मत्स्यहरण के लिए मनाही अवधि

- क) अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के समुद्री जल क्षेत्र में मत्स्यहरण करने के लिए मनाही अवधि निम्नलिखित हैं ।
- ख) प्रत्येक वर्ष 15 अप्रैल से 31 मई तक की अवधि (जिसमें प्रारंभ तिथि तक अंतिम तिथि शामिल है), बाटम ट्रालिंग गियर तथा शार्क फिशिंग वाले मत्स्य जलयानों के लिए मत्स्यहरण की मनाही अवधि होगी ।
- ग) प्रत्येक वर्ष मई माह के 01 तारीख से लेकर सितम्बर माह के 30 तारीख तक की अवधि (जिसमें प्रारंभ की तिथि और अंतिम तिथि भी शामिल है), के दौरान समुद्री सीपी का फिशिंग करने के लिए मनाही अवधि होगी ।

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

अंडमान समुद्री जल क्षेत्र में गहरे पानी में मत्स्यहरण के लिए अनुमति प्राप्त करने की शर्तें

- मत्स्यहरण तथा जलयान लाइसेंस प्राप्त करने के लिए मत्स्य निदेशक के पास आवेदन करना होगा ।
- कम्पनी को आवधिक जमा के रूप में 1.00 लाख रूपए की राशि जमा करना होगा, जिसे सीजन/लाइसेंस अवधि के अंत में वापस किया जाएगा ।
- कम्पनी को अपने मत्स्यहरण जलयान तथा गियर को निरीक्षण के लिए पोर्ट ब्लेयर में लाना होगा ।
- कम्पनी को द्वीप के प्रत्येक प्वाइंट में ज्वार (हाई टाइड) के जल स्तर से छह नाटिकल मील से आगे ही अपने मत्स्यहरण जलयान का प्रचालन करने की अनुमति होगी ।
- कोई भी जलयान समुद्र तट से छह नाटिकल मील के भीतर मत्स्यहरण नहीं करेगा और द्वीप के क्रीकों में प्रवेश नहीं करेगा ।
- कोरल रीफ क्षेत्र में किसी भी जलयान को मत्स्यहरण की अनुमति नहीं होगी ।

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

- कम्पनी को कुल पकड़ी गई मछलियों का कम से कम 20 प्रतिशत भाग मत्स्य निदेशक द्वारा निर्धारित दर पर अथवा दोनों पार्टियों द्वारा आपस में बातचीत के जरिए सहमत होने वाले दर पर पोर्ट ब्लेयर में मेसर्स अंडमान फिशरिस लिमिटेड को देना होगा ।
- पकड़ी गई मछलियों को समुद्र में मत्स्यहरण जलयान से किसी अन्य जलयान में नहीं दिया जाएगा ।
- कम्पनी लाइसेंस अवधि के दौरान किसी विदेशी मूल के व्यक्ति को मत्स्यहरण जलयान पर न तो काम पर रखेगा और न ही उसमें चढ़ने की अनुमति देगा ।
- प्रत्येक यात्रा के दौरान पकड़ी गई मछलियों का विवरण मत्स्य निदेशक के पास जमा करना होगा ।
- यदि कम्पनी नियमानुसार रॉयल्टी का भुगतान करने के पश्चात् इन द्वीपों से मुख्यभूमि/विदेशी देशों में मछलियों को भेजना चाहता है तो उसे मत्स्य/मत्स्य उत्पाद के संबंध में अनापत्ति प्रमाण पत्र लेना होगा ।
- कम्पनी गहरे पानी/तटीय क्षेत्र के मत्स्यहरण जलयानों में स्थानीय युवाओं को काम करने तथा अनुभव प्राप्त करने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करेगा और काम पर रखने की अवधि के दौरान इन स्थानीय युवाओं को मासिक वेतन का भुगतान करेगा तथा जलयान में मुफ्त भोजन उपलब्ध कराएगा ।